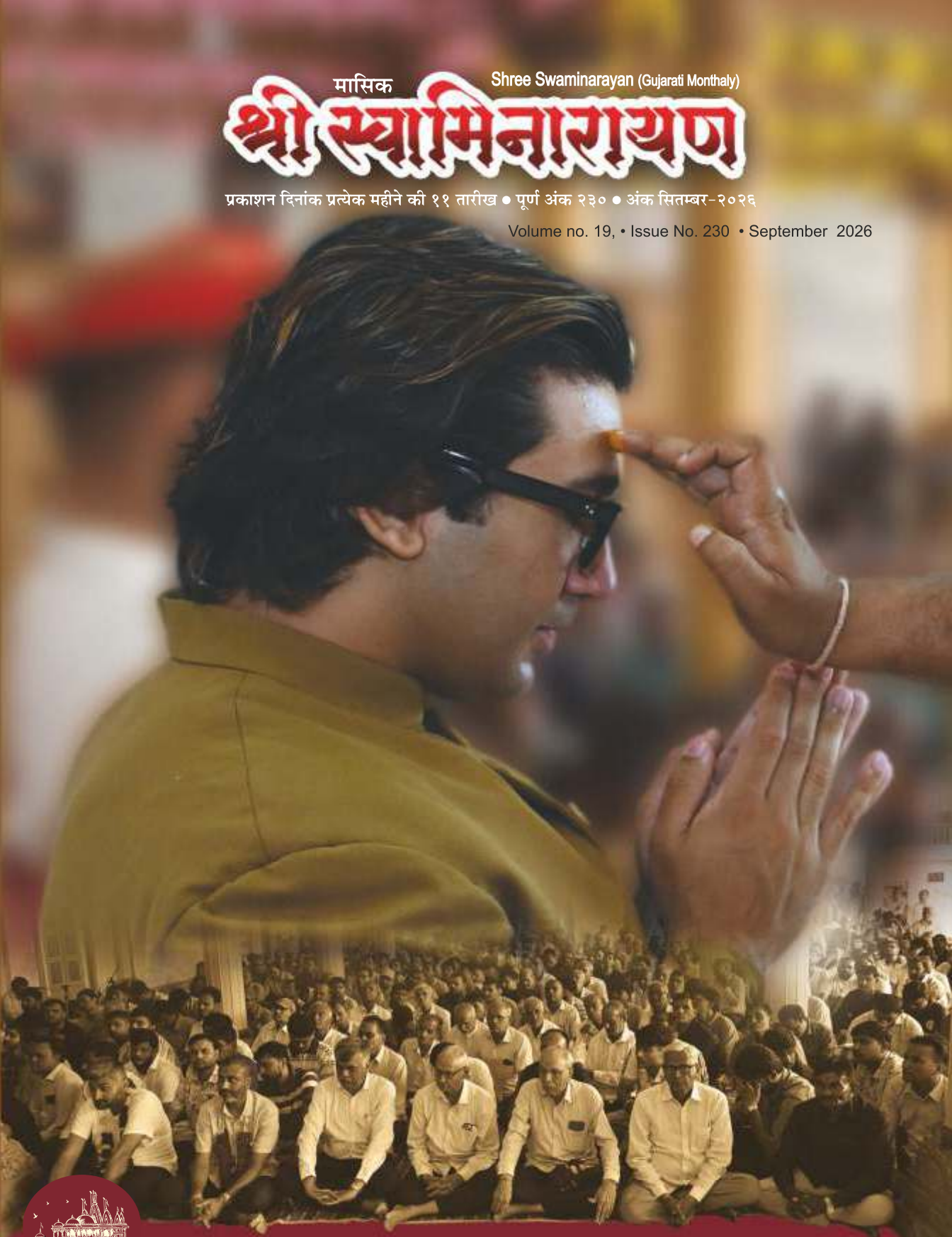
मासिक
Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)
श्री स्वामिनारायण
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ● पूर्ण अंक २३० ● अंक सितम्बर-२०२६
Volume no. 19, • Issue No. 230 • September 2026



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-





अपने २९ वे प्रागटोत्सव के अवसर पर सभा में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री और प्रागटोत्सव की आरती उतारते संत ।





टोरेन्टो (कनाडा) मंदिर के १८ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. महाराजश्री ।



कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर के २१ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री ।





स्वीडन (यू.के.) मंदिर के ३५ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते तथा अभिषेक करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - २० ● अंक : २३० ● सितम्बर-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृतवचनो	०६
०४.	धर्मकुमार धोलका गये	१०
०५.	अयोध्याप्रसादजी महाराज मे श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन	१३
०६.	अपने आचार्य की लाल पगड़ी	१४
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१७
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२२

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

श्रीहरि ने शिक्षापत्री में चातुर्मास के लिये विशेष रुप से सत्शास्त्रो को पढने के लिये लिखे है। अपने आराध्यदेव को जो पसंद हो उन शास्त्रो को पढाना चाहिए। इसमें ही अपना भला है। श्रीहरि द्वारा मान्य शास्त्रो में चार वेद तथा व्यास सूत्र एवम् श्रीमद् भागवत पुराण तथा महाभारत के विषय में तथा विष्णुसहस्त्रनाम तथा श्रीमद् भागवत गीता तथा विदुर द्वारा बतायी गई नीतियाँ तथा स्कन्द पुराण का जो विष्णुकांड है उसे जो वासुदेव महात्म और धर्मशास्त्र के मध्य में रहकर ही याज्ञवल्क्यऋषि की स्मृति तथा ये आठ सत्शास्त्र यह हमारे आराध्यदेव है।(शि. श्लोक ९३, ९४ और ९५)

श्री नरनारायणदेव देश के सत्संग देश-विदेश में अधिक फैल रहा है। अभी प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री अमेरिका के धर्म प्रवास पर गये थे।

प.पू. लालजी महाराजश्री स्वीडन अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर के ३५ वें पाटोत्सव के अवसर पर पधारकर वहाँ के सत्संग को नवपल्लवित किये। बोस्टन (अमेरिका - आई.एस.एस.ओ.) मंदिर के २० वे पाटोत्सव पूरे धर्मकुल की उपस्थिति में मनाया गया। पिछले अधिक समय से प.पू. लालजी महाराजश्री अमेरिका, यु.के. स्वीडेन आदि देशो में प्रायः पधारकर वहाँ के सत्संग प्रवृत्ति को बढा रहे है। सितम्बर में अमेरिका के कंटकी मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पधारेगे। वहाँ से टोरन्टो केनेडा का अति प्रसिद्ध भव्य विशाल शिखरबद्ध मंदिर के निर्माण के लिये सत्संग सभा करके प्रेरित करेगे। अपने श्री नरनारायणदेव की देश-विदेश में लगातार सत्संग की प्रवृत्ति धर्मकुल द्वारा की जा रही है। हमे अपना कर्म करना है। यह अपना कर्तव्य है। कुछ दिने के बाद अपने धोलका मंदिर का ''त्योहार'' अपने सामने आ रहा है। प.पू. बड़े महाराजश्री अने प.पू. लालजी महाराजश्री ने ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में धोलका मंदिर की २०० प्रदक्षिणा करने का आदेश दिये है। यदि धोलका नहीं जा सके तो अपने किसी मंदिर पर जाकर प्रदक्षिणा अवश्य पूर्ण करे।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा (अगस्त-२०२६)



८ प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के २९ वे प्राकट्योत्सव को अपने सानिध्य में और श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य मे उल्लास पूर्वक मनाया।

९ एकादशी के दिन श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

१८ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

२१ से २३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (अमेरिका) के २९ वे पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

२६ से ३० टोरन्टो केनेडा श्री स्वामिनारायण मंदिर सत्संग सभा मे पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अगस्त-२०२६)



८ श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य मे और प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ सानिध्यमें संत-हरिभक्तोने २९ वाँ प्राकट्योत्सव उल्लास पूर्वक मनाया।

९ श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

१४ से १६ स्वीडन (युरोप) श्री स्वामिनारायण मंदिर के ३५ वे पाटोत्सव पर पधारना।

२१-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (अमेरिका) के २० वे पाटोत्सव पर पधारना।

२५-२६ मेरीलेन्ड (अमेरिका) सत्संग सभा में पधारना।

श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से

अमृतवचनो

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)



प.पू. लालजी महाराजश्री के २९ वे प्रगटोत्सव के अवसर पर, ता. ८-८-२०२६

प.पू. बड़े महाराजश्री : आदरणीय संतो एवम् प्यारे सत्संगि भाईयो आज का दिन हम सब के लिये महत्वपूर्ण दिन है। कारण सर्वावतारी श्रीहरिने हम सभी को लालजी महाराजश्री की भेट दिये है। अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश की गद्दी परम्परा में कुछ वस्तुए जीव मे है। सदैव संत-हरिभक्तो के साथ रखकर आचार्य है तो ये प्रवृत्तियाँ करते है।

हमारे सम्प्रदाय की महिमा और आत्मबुद्धि का सम्प्रदाय है। कुछ शब्द अपने सम्प्रदाय मे विशेष शब्द है। आत्मबुद्धि शब्द वचनामृत में आता है। आत्मबुद्धि किसे कहते है यह सत्संगि जानते है। दूसरे लोग नही जानते है। कई शब्द ऐसे है। चैष्ठा, राजीपा यह शब्द अपने सत्संगि जानते है। सामान्य प्रयोग के शब्द नही है। मै स्कुल में था। तभी हमे एक बात मजाक में आयी कि मै चेष्ठा करता हूँ, तुम्हे करनी है? उसे लगा कि चेष्ठा क्या है? वह बोला मुझे नही करना है। यह साम्प्रदायिक शब्द है।

देव-आचार्य का एकात्मपणा भी है। हमे आप का अभिमान है। संतो का सम्मान अहमदाबाद के गद्दी में निहित है। एक साधारण उदाहरण कह रहा हूँ। एक बार आबू में पू. बापुजी बिराजमान थे। वहाँ पर कुछ संत मिलने आये। बापू के साथ रहने वाले एक नौकर से पूछे कौन आया? नौकरने कहा साधु तथा उनके साथ एक छोटा साधु भी आया है। बापू गस्से मे आ गये। संत को क्यो तुकारा? उसे डॉट लगा दी। कल ही यदि दीक्षा लिया हो तो भी साधु को तुकारा नही चाहिए।

संत के प्रति आदरवाली एक पुरानी बात है। शा. चेतनदास स्वामीजी थे। बापूजी उसी स्थान पर दण्डवत कर रहे थे। तभी बापूजी खडे होकर दण्डवत को रोके। यह देखी हुई बात है। आपस में सम्प्रदाय में प्रेम है। यह अपने सम्प्रदाय का संविधा न रहे। गरिमा और एकता का रहस्य भी है।

अपना आगामी उत्सव धोलका में आ रहा है। लालजी महराजश्री ने समैयो तथा जेतलपुर के उत्सव का नेतृत्व किये। धोलका का भी सम्भालेगे यह मेरी सलाह है। विशेष भजन हो तथा राजीपा प्राप्त हो। त्योहार के अवसर पर सभी धोलका श्री मोरली मनोहरदेव की विशेष २०० प्रदक्षिणा करियेगा।

लालजी महाराजश्री देश विदेश मे धगस से अच्छा कार्य कर रहे है। आज के दिन संत-हरिभक्त साथ मिलकर नरनारायणधेव की प्रार्थना करियेगा। महाराज इन्हे विशेष बल दे। सम्प्रदाय का अधिक प्रचार हो। नरनारायणदेव की गद्दी की ध्वजा चारो दिशा में लहराये। इतना कह कर विराम दे रहा हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : सर्व प्रथम गाँव-गाँव से तथा अन्य क्षेत्र से हरिभक्त शुभकामना और आशीर्वाद भेजे है। उन्हे खूब धन्यवाद।

देव की निष्ठा और देव के प्रति समर्पण यह जब तक जीवन मे नही आता है। तब तक किया गया सत्संग, नियम, उपवास, भजन, भक्ति यह सब व्यर्थ है। हम अपने को भाग्यशाली मानते है। यह खुमारी महाराजश्री तथा बडे बापजी के यहाँ से मिलती है।

विशेषकर ६ से १० जनवरी २०२७ मुरलीमनोहरदेव के त्योहार को उल्लासपूर्वक मनाना है। जिसकी तैयारी और योजना शुरु होगयी है। साइट परे छोटे-बडे कार्य वर्षा समाप्त होते ही पूरे हो जयेगे। जिस प्रकार ४-५ वर्ष में बडे-बडे प्रसंग हुए है। उसी प्रकार त्योहार भी उल्लासपूर्वक हो।

हम सभी भाग्यशाली है। महाराजने नव मंदिर बनवाये। उसमे से ५ मंदिर अपने हिस्से में आया है। अहमदाबाद और भुज मे नरनारायणदेव, मूली में राधाकृष्णदेव, जेतलुपर में रेवती बलदेवजी महाराज धोलका में मुरली मनोहरदेव, जो स्वामिनारायण भगवानने पधराया है। जिसे अहमदाबाद देश के हरिभक्तो के रुप में, संत के रुप में हम सभी ने स्वाभिमान होना चाहिए।

बडे बापजीने अभी बताया है कि धोलका जाकर मुरलीमनोहर की २०० प्रदक्षिणा करे। जो नही जा सके, उसे अपने मंदिर में नजदीक के मंदिर में अवश्य करे। संत तथा अग्रणी हरिभक्त के साथमिलकर प्लानिंग कर रहे थे। तभी एक विचार आया। धोलका क्षेत्र की २०० बच्चियों को शिक्षा पूरे जीवन निःशुल्क अध्ययन कराया जाये। गादीवालाश्री और श्रीराजा की अध्यक्षता में उत्सव के पहले वहाँ के मंदिर में यह कार्यक्रम होगा।

अधिक समय से एक छोटा आब्जरवेशन देखे है। आरती के बाद, सभा के बाद नरनारयणदेव की, राधाकृष्णदेव, रेवती बलदेवजी, तथा पंच देव की जय बोला जाता है। कई स्थान पर मुरलीमनोहरदेव की जय बोला नही जाता है। तो आज हमे संकल्प करना है। केवल उत्सव के समय ही नही। हमे संकल्प लेना है कि जो देव के मंदिर है। वहाँ पर मुरलीमनोहर की जय बोले। इसका गर्व होना चाहिए। हम सभी की संयुक्त जिम्मेदारी है कि मूल सम्प्रदाय की परम्परा, प्रणालिका और इतिहास लोगो तक जाये।

पदयात्रा का भी आयोजन रखा जायेगा। त्योहार के उपलक्ष्य में पदयात्रा दिवाली के बाद समय पर रखा गया है। मुरली मनोहरदेव का दर्शन हो। उत्सव में कई कार्यक्रम होगा। परंतु इसके पूर्व प्रत्येक कार्यक्रम में साथ सहकार से जुडने की विनंती है। देश-विदेश से अधिक संख्या में हरिभक्त आये। तथा त्योहार उल्लासपूर्वक मनाया जाये। मुरलीमनोहरदेव की जय जयकार हो। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना के साथ पुनः आप सभी को धन्यवाद।

प.पू. महाराजश्री : नरनारायणदेव के सानिध्य में, उनके चरणो में हम सभी आये है। हमलोग अलग प्रकार के है। जन्म दिन अलग रुप से मनाया जाता है। आपने देखा है। हम सभी भगवान लक्षीय होता है। बीच में संतो के साथ हुए। तुम्हारा जन्म दिन है। खराब प्रसंशा तक करेगे। हमे भगवान का कार्य करना है।

आतम स्वामी ने कहा कि लालजी महाराजश्री अधिक कार्य करते है। लालजी महराजश्री का आब्जरवेशन अधिक है। मैने ८०% सौंप दिया है। यह देव के बच्चे है। देव का खून है। इस में क्या देखना है। भगवान ने कुछ तो सोचा होगा। तभी जन्म दिये होगे ?

उनका स्वास्थ्य अच्छा है । आप का स्वस्थ रखे । महंत स्वामी (शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी - जेतलपुर) । आप एक बार व्यायाम शाला में आये थे । फिर से आवे । मिलकर छेटे पर कसरत करते है । भगवान परायण करनी की बात होती है ।

लालजी महाराजश्रीने अभी मुलीमनोहरदेव की बात की अधिक महत्वपूर्ण है । महाराजने नव मंदिर बनवाये है । इसका गर्व है । विशेषकर दशवा छपैया मैं है । इसका गर्व है । आप तो अहमदाबाद देश और नरनारायणदेव की बात किये है । जिसकी रोटी खाते है । उसका खून दौडता है । इन्ही के कारण श्वास लेते है । तो बाद मे नरनारायणधेव और अहमदाबाद देश की नही करे तो दूसरी जगह जाकर आचार्य हो गये होते । बड़े बापजीने कहा है देव के प्रति एकात्मपणा होना चाहिए. संतो-भक्तो प्रति अपनापन सदैव बना रहे ।

कई लोग बिमारी की बात करते है । यह नही वह नही । आप बाहर जाये तो अच्छा है । बीच में एक आया कहा कि आत्महत्या कर लूँगा । मैने कहा जा भाई साबरमती में पानी है । पुलिसवाले को पीछे भेजता हूँ । वह पकड कर जेल में कर लेगा । ऐसे भगवान मिले है । सब मिलने के बाद यहि हमे लापरवाह रहे तो यह भगवान का दोष नही अपना दोष है । अपना सत्संग सदैव अच्छा रहा है । खराब सत्संग देखा नही है । वासुदेवप्रसादजी महराजश्री से लेकर देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और बड़े बापजी द्विशताब्दी में बड़े संत आये थे । इसके बाद कितने उत्सव-समैया चालू रहता है । गाँव-गाँव मे कितनी प्रगति उन्नति हुई है । हरिभक्तो में, संतो में कितना लगाव और प्रेम है । तो भी कमी लगती है ? जो देवका है वह अपना है । उससे हमे साथ भी नही रखना है । जो भी हो भगवान का होना चाहिए । किसी भी भगवान का हो ।

विशेषकर पिछले बार धर्मादा के लिये मीटिंग किये थे । **QR Code** सोमवार से चालू हो जायेगा । यह धर्मादा के लिये है । यह जानकारी के लिये बता रहा हूँ । कई बार ऐसा होता है । हरिभक्तो की प्रतिमास वेतन आता है । अंत में धर्मादा देना हो तो प्रयोग कर लेते है । **QR Code** का लाभ ले सकते है । अभी सबकुछ मोबाईल में होता है । खराब अच्छा सब कुछ रहता है । लेकिन देव के लिये छोटा-बडा हो तो महाराज की आज्ञा है । मेरा नही । हमे पैसा की आवश्यकता नही है । यह पैसा सत्संग के विकास के लिये है । यह आवश्यकता के लिये है । देश में विदेश में सत्संग का विकास होता है । इसमें आप सभी का सहयोग है । हमें संतोष है । आनंद है । माँग के क्या करना क्या ? एकत्र करके सोना-चाँदी लेगे । उस पर बैठ तथा शयन तो नही कर सकते है । ऐसा करने पर पाप लगता है ।

इस समय जो हम सभी के मिलता है । इतना किसी को नही मिला है । देव के लिये जो आता है वह देव मे खर्च किया जाता है । दूसरे सत्कार्य किये जाते है । भगवान की कृपा से हम कमजोर गरीब नही है । भगवान जैसे भगवान मिले है । हम से धनवान संसार में कोई नही है । हम से कोई बडा नही है । यह स्वाभिमान हमे रखना है ।

गर्व से एक बाप के रुप में कह सकता हूं । बडे बापजी देख रहे है । मैं साईडलास करके जिममें जाता हूँ । लेकिन लालजी महाराजश्री को भगवानने गुण दिय है । वे सम्प्रदाय के लिये कर रहे है । और करते रहेगे । इसमें से भी सीखना है । बड़े आते है । आप के बच्चो में वह आगे ले जाना है । सात पीढी देखते आ रहे है । आठवी पीढी देख रहे है । तो आप अपनी तीन पीढी को दिखाये । जिम्मेदारी की बात है । वातावरण देना है । यह पद अधिक कठिन है । त्याग बलिदान माँगता है । बड़े महाराज करते है कि भगवान के बच्चे को भगवान की तरह कार्य करना

चाहिए। इस लिये हमे कुछ नही कहना है। बच्चे-बच्चियो में सत्संग का गुण आये ।ऐसा घर मे वातावरण होना चाहिए। ऐसा वातावरण होने से अपने द्वारा किये गये सत्संग से बच्चो में संस्कार आयेगा । इसके लिये नरनारायणदेव की कृपा से हम लोगो के पास सब कुछ है। लेकिन प्रयत्न करना अपनी हकीकत है।

मुली मनोहरदेव की छोटी-बड़ी प्रवृत्ति करना है। लालजी महाराज को मैने कहा हम दोनो जायेगे । कुछ लोगो से कहेगे। हमे भगवान की भजन करना है। भजन हो अच्छा है। भगत आप तो माला जपते है, मुझे सुनते है, बराबर ? मारना का कोई रोक नही है। अपने बैढनी पर बैठे हो। या घर के दलान मे बेठे हो। हाथ में माला न भी हो तो हाथ हिलाना चाहिए। महंत आप की तरह हो तो जमीन खोद डाले। इस प्रकार पैर हिलता रहे। माला जपे। माला फेरे चाहे कथा मे बैठे हो या सभा में माला फेरना अपना लक्षण है। कारण हाथ आधा पीछे न रहे। नही तो लोग कहेगे सुनो तुम्हारे लिये कहा जा रहा है। सत्य बात है न नारण स्वामी ! बड़े संत भी ईसी प्रकार दिन निकालते है ? ५६ के हो गये।

वास्तव में वह उपर से प्राप्त संस्कार है। बडे बाप के साथ बैठकर सुना है। और लालजी महाराजने भी सुना है। ग्रहण करने की बात है। इस वातावरण में संस्कारो सम्प्रदाय के गुण शास्त्र में लिखे जो लिखा है सहज रुप से आ जाता है। प्रतिदिन सुनते ही रहते है। इतिहास कैसे बना है। उस इतिहास को जाने। इतिहास नही भूलना चाहिए। बुर्जुगोने क्या किया है याद रखे ? पेट उपर यही बाँधकर दो रोटी खिलाये है। सत्संग से तिलक चांदला कंठी छुटेगी नही । इसी प्रकार संत, हरिभक्तो ने सत्संग के लिये बलिदान दिये है। यह परम्परा बनाये रखना है। पहले क्या था । घोडा गाडी से चलते थे । समयानुसार जो होता है अच्छा ही होता है।

आज के दिन ऐसी प्रार्थना करे। भगवान अधिक आशीर्वाद दे ? सत्संग में वृद्दि हो, सद्बुद्धि और बल दे। ऐसा हम सभी नरनारायणधेव के चरणो में प्रार्थना करे।

SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE - KALUPUR

Information for foregin donation towards Shree Narnarayan Mandir Trust for all Satsangi, who are belongs to abroad (out side India) remit their donation to Shree Narnarayan Mandir Trust, Kalupur, Ahmedabad. Only in Our FCRA A/c. Details as under.

BANK NAME	:	**STATE BANK OF INDIA**
BRANCH	:	**FCRA CELL, MAIN BRANCH, SANSAD MARG, NEW DELHI-110001**
BENEFICIARY NAME	:	**SHREE NARNARAYAN MANDIR TRUST**
SAVING BANK A/C. NO.	:	**401 890 15898**
IFS CODE	:	**SBIN0000691**
SWIFT CODE	:	**SBININBB104**
BENEFICIARY ADDREES	:	**SHREE SWAMINARAYAN TEMPLE, KALUPUR, AHMEDABAD, GUJARAT, INDIA**

Special instruction for remittance made through NRE Cheque in Indian Rs.-

If any donation route from abroad to NRE A/c in India (of Donor), please donate with your cheque along with copy of passport of related donor, Only afterwards their donation will be credited in above mentioned A/c only.



धर्मकुमार धोलका गये

- शा. स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

गुर्जर आर्यावर्त में विराटनगरी शोभा दे रही है। वह युग था। जब वर्तमान की धोलका नगरी ''विराट'' इस नाम से प्रसिद्ध थी। चारो तरफ अनेक वृक्षो से धिरे ऐसी विराटनगरी तब भगवान व्यासने महाभारतमें विराटनगरी का उल्लेख किये।

चौदह वर्ष वनवास के समय पांडव लोग यहाँ पर गुप्त वास किये थे। विराटनगर में विराट के राजा के यहाँ पाँचो पांडव अलग-अलग कार्य सम्भालकर गुप्तवास किये थे। अपने शस्त्रो को यहाँ पर छिपा दिये थे। विराट की पुत्री उत्तरा को नृत्य सिखाये थे। कीचक का वध किये थे। ऐतिहासिक स्मृति को दिखाती पांडवो की शाला आज भी इस नगर में शोभा बढा रही है।

विराटनगर के बाद वर्तमान में धोलका नगरी पंडितो को नगरी भी मानी जाती है। इसका साक्ष्य अपनी प्राचीन साहित्य मे है।

समय, समय का कार्य करता है। जिस स्थान पर उत्तरा का विद्या मंदिर था। आज उस स्थान पर लाल ध्वजा के स्थान पर हरी ध्वजा के स्थान पर हरी ध्वजा है। इस पांडवो की शाला में आज मस्जिद स्थित है। जहाँ पर वेद मंत्रो की आवाज आती थी। वहाँ पर आज कुरान की कलमा पढी जाती है। फिर भी इस धवलनगरी से वेद विद्या का नाश नही हुआ। अभी भी कई विद्या वाचस्पति, सरस्वती को मुख कमल में रखने वाले इस नगर में आबाद है। वेद वेदांत, व्याकरण, ज्योतिष इत्यादि के कई पंडित इस नगर में ज्योत जलाये है।

आज से दो सौ वर्ष पहले के समय था। पूरे गुर्जर क्षेत्र में निगमागमना को पार पाने वाले, विद्वता और विजय के श्री और सरस्वती के चयनित काशीनाथ पंडित मंदिर में आजकर रहते थे। शेष दूसरे दूर के कई विद्या के उपासक इस काशीनात के घर पर आते थे। प्रातः काल वेदमंत्रो से वातावरण परम दिव्य हो जाता था। राहगीर सुनकर दोघडी खडे हो जाते थे। वेद मंत्र की आवाज का आनंद प्राप्त करते थे। तो वे भी ताल मिलाते थे। पंडित जी अर्थशास्त्र, वेद-वेदांग धर्मशास्त्र और उपनिषद के अद्वितीय ज्ञान था। धोलका पंडितो के नगरी के रुप में जानी जाती थी।

काशीनाथ पंडित का एक सुंदर घर था। छोटा सा चौक और एक तरफ छोटा कुँवा था। अनेक प्रकार के फूल बगीचा तथा सुंदर गौशाला ऋषि-मुनि के आश्रम की तरह दिखाई देता था। लेकिन यह शांति एक दिन दुःख मे बदल गयी। पंडितजीका एक सुंदर छोटा प्रक्रिया वाला बेटा था। पुत्र एक दिन खेलते खेलते पानी के टंकी मे गिर

गया । और मृत्यु को प्राप्त हुआ थोडी समय के बाद उसकी माँ काम से मुक्त होकर पुत्र को खोजने लगी । उन्होने पानी की टंकी मे नजर डाली तो हृदय फट गया । हा पुत्र ! करके वह भी पानी के कुए में कूद गयी । वह सब देखकर पंडिती भी अपना प्राण त्याग दिये । मोह में आकृष्ट होकर अपनी विद्वता भूल अपनी शरीर को कुए में डाल दिये । इस प्रकार तीनो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गये ।

यह तीनो गृहवासना के कारण काशीराम पंडित ब्रह्म राक्षस की गति को प्राप्त हुए । अपने मकान में रहने वालो को रहने नही देते तथा उसे मृत्यु को जीत करा देते थे । वह घर धोलका का भूतिया घर घोषित हो गया । अब इस तरह आने में सभी डरते थे । इस घर में अभीभी दूर से आने वाले विद्यार्थीयो को ब्रह्म राक्षस का भोग बनना पड़ा । इस प्रकार भूतो को टीलो घर में रहने लगी । कई योग्य कुमार इस विद्याशालामें मृत्यु को प्राप्त हुए ।

जहाँ पर दिव्य मंत्रो की ध्वनि होती थी । वहां पर आज भूतमंडली का निवास हो गया था । इस विरान जगह पर कोई रुकता नही था ।

लेकिन एक समय ऐसा आया कि इस स्थान के उद्धारक आ गये । स्वामिनारायण मंत्र के सच्चे उपासक और शक्तिशाली संत श्री गोपालानंद स्वामी ५० संतो के साथ घुमते घुमते विराटनगरी में गये । गाँव में किसी से ठहरने के स्थान को पूछे । कोई दुष्ट व्यक्ति ब्रह्मराक्षास वाला घर बता दिया । महाराज वह घर एकादम खाली है । कोई रहता भी नही है । आप अपने तरह से ठहरे । थैली उतारकर, श्रीहरि के संत स्वामिनारायण..... स्वामिनारायण.... बोलते हुए । सीढी पर चढ़ गये । और दरवाजा खोलकर अंदर बैठ गये । अच्छा घर देखकर गोपालानंद स्वामी खुश हो गये । और बोले ऐसी एकांत जगह ही चाहिए थी । संतोने सफाई कर दिया । दिवेल लाकर दीपक जला दिये । शाम को स्वामिनारायण नाम की धून होने लगी । शायं काल की विधि पूर्ण हुई । सभी लोग थककर सो गये । उस गाँव में कोई सत्संगि नही था ।

मध्यरात्री का १२ बजे का समय था । गोपालानंद संतो को पढा रहे थे । उस सयम मूर्तिमान ब्रह्म राक्षस प्रगट हुआ । पेड की डालियाँ तोडकर संतो के उपर फेकने लगा । स्वामीने कहा कि मूर्ख क्या कर रहे हो ? बड़ा पंडित होकर तुम्हे ज्ञान नही है । सैकडो को खाने के बाद भी संतोष नही है ? अब तो सुधर जा कब तक पाप के कीचड में रहेगा । इस प्रकार संतो का द्रोह करके कब छूटेगा । स्वामी की मुखवाणी सुनकर पस्चाताप करने लगा । रोने लगा । तथा बोला संत आप लोग मेरा कल्याण करो । मै पापी हूँ । मेरी कोई गति नही है । यदि अपना कल्याण चाहते हो तो अभी प्रगट पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान इस धरती पर बिराजे है । तुम उनकी सेवा करो । अभी गढपुर में मंदिर की नींव खोदीजा रही है । आप सभी भूत वहाँ जाकर उत्तम गंगा मे से पत्थर उठाकर मंदिर के नीव मे सेवा करो । सेवा से आपका कल्याण होगा ।

स्वामी के आशीर्वाद और आज्ञा के साथ यह ब्रह्मराक्षस भुत मंडली के साथ गढडा गया । ऐसी भव्य सेवा देव को भी नही मिलती है । स्वामिनारायण के स्मरण से उसका पाप टल गया । ''सेवा मुक्तिश्च गम्यताम्'' यह जीवन में उतार लिया । उन्मत गंगा मे से बडे-बडे पत्थर लाकर सुंदर सेवा की । स्वामिनारायण के स्मरण से सेवा का फल कैसा मिलता है ।

"सहजानंद ए नाम सांभळी रे,
जाय पाप पूरवना बळी रे,
सुणी स्वामिनारायण नाम रे,

सर्या कंईक जीवना काम रे."
काने ए नामनी भणक पडी रे,
तेने अक्षरपोळ उधडी रे."

इस प्रकार ब्रह्मराक्षस और दूसरे ३०० जितने भूत सद्गति को प्राप्त हुए। कैसी सेवा कैसा मोक्ष। जिस स्थान पर ब्रह्म राक्षस का कल्याण किये यह स्थल मंदिर के चौक में छत्री है। और हनुमानजी प्रस्थापित है।

जिस स्थान पर संतो के पैर पडे हो उस स्थान पर श्रीहरि अवश्य आते है। जहाँ पर संत वहाँ पर हरि। जिस शहर मे सामने से नही देखते थे। ईर्ष्या करते थे। वही आदमी संतो और श्रीहरि का गुण गाते है। वाह ! ऐसे महान संत ! ब्रह्म राक्षस का उद्धार किये। सभी लोग पैर छूने लगे। सभी लोग भोजन तथा स्थान देने लगे। इस प्रकार संतो के प्रताप से धोलका में सत्संग हुआ था।

और परब्रह्म परमात्मा स्वामिनारायण भगवान इस नगर को अधिक पवित्र बनाये। भक्तगणो को परमानंद देने के लिये धोलका की भूमि उपर पर्दापण किये। परमात्मा के चरणो से पवित्र हुई नदी लोक पूज्य तथा लोक वंदित होकर अद्यापि गंगा रुप मे बहती है। परमात्मा के चरणो से धोलका नगरी तीर्थ धाम बन गयी। गाँव में रेवाशंकर भाई चुस्त सत्संगि थे। वह प्रभु की सेवा करने लगे। प्रभु वही पर रुके। रेवाभाईने अवसर देखकर भगवान से विनंती करके बोले है। महाराज ! इस नगर में मंदिर बनेगा तो सत्संग बढेगा। भगवान भक्त की ईच्छा पूरी करने के लिये पूर्णानंद स्वामी को आदेश दिये। हे स्वामी आप धोलका में विशाल मंदिर बनवाये। रेवा शंकर तथा अन्य भक्तो की ईच्छा पूर्ण करे।

सुंदर शिल्प कार्य वाला, एक शिखरवाला गगन चुम्मी मंदिर तैयार करने के बाद परमात्मा श्रीहरिने बडे धामधूम से संवत १८८३ वैशाख वद-४ (पंचमी) को प्रतिष्ठा महोत्सव किये। अपने हाथ से मुरलीमनोहरदेव को मुख्य स्थान पर पधराकर श्रीहरिने स्वयं आरती उतारे थे। तब स्वामिनारायण का जयधोष फैल गया। इस बात को निष्कुलानंद स्वामीने निष्कुलानंद काव्य में कैसे लिखे।

"वळी धोळके मंदिर करावी रे,
तेमां मूर्ति सारी पधरावी रे,
एवो करीयो एह उपाय रे,
जेणे करी जन सुरवी थाय रे."
"मोरली मनोहर हरिकृष्ण रे,
पोते श्रीजी थई अति प्रसन्न रे,
जीव अनंत उद्धारवा काज रे,
आव्या त्यां घणीवार लई समाज रे."

सज्जनो ! आज धोलका मे जो सुंदर मंदिर है। जिसका हम लोग दर्शन करते है। इसकी पूर्व क्या आपने पढा। श्रीजी संस्थापित नव मंदिरो में धोलका का स्थान बहुत आदरणीय है। जिसका आगामी ६-१-२०२७ से १०-१-२०२७ हरि के द्वारा प्रस्थापित देवो के २०० वर्ष पूर्ण हो रहा है। अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की अध्यक्षता में ''त्योहार'' महामहोत्सव मनाने की भव्य तैयारी चल रही है। तो पूरा सत्संग समाज इस उत्सव में तन, मन और धन से सेवा मे जुड जाये। यह धोलका के देव महाप्रतापी है। सभी का शुभ मनोरथ संकल्प पूर्ण करते है।

नलकांठा क्षेत्र की राजधानी अर्थात् धोलका है। नलकांठा के सभी भक्त धोलका में आते है। उत्सवो, पारायणो, पाटोत्सव कराते है। यहाँ पर स्थायी संतो का निवास है। मुमुक्षुओ धोलका का स्मरण भी धन्यभागी बनाता है।

अयोध्याप्रसादजी महाराज मे श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन

– जे.पी. स्वामी (कोठारी स्वामी कालुपुर मंदिर)



एकबार अयोध्याप्रसादजी महाराज को वृंदावन जाना पडा । वहाँ पर मथुरा नाम के एक चौबे मिले । उनके साथ दूसरे चौबे भी थे । अयोध्याप्रसाद को देखते ही दूसरे चौबे को नही तथा मथुरा चौबे को आचार्यम हाराजश्री मे श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन हुआ । अरे देखो श्रीकृष्ण परमात्मा अपने सामने खडे है ।

मथुरा की बात सुनकर उसके साथी आचार्य से चारो तरफ देखने लगे । सामने से आचार्य महाराज आ रहे थे । श्रीकृष्ण भगवान वहाँ पर दिखाई नही दिये ।

''अरे क्या देख रहे है ? कुंजविहारी का दर्शन करे । मथुरा एक बात देखे जा रहे थे ।''अरे मथुरा – एक चौबने कहा'' तुम पागल तो नही हो गये हो ? कहाँ पर श्रीकृष्ण है ? तुम किसके दर्शन की बात कर रहे हो ।

अरे मूर्खो ! मथुरा बोले, यह सामने तो आ रहे है । वह आचार्य की तरफ अंगुली दिखाते बोले ।

''अरे ये तो स्वामिनारायण आचार्य है । दूसरे चौबने के कहा । नही... नही.... मथुरा जल गया । आप का दिमाग काम नही कर रहा है । आँख खोलकर देखो कुंजविहारी मुरलीधर मेरे सामने हँस रहे है । अरे नसीब के खराब लोगो । तुम्हे प्रभु क्यो नही दिखाई दे रहे है । आप दर्शन क्यो नही करते ?

आचार्य महाराज मे श्रीकृष्ण भगवान का दर्शन करके मथुरा के चौबे पागल हो जाते थे । और मित्र लोग आश्चर्य करते थे । इसे क्या ? हो गया है । ऐसी चर्चा करने लगे । क्योकि अपने आचार्य मानव रुपमें दिख रहे थे । उन्हे बात समझ में नही आ रही थी । कुछ समय के बाद महाराज उनके पास आ गये ।

समीप आने पर अन्य चौबे लोगो को ज्ञात हो गया । वे लोग भी महाराज में श्रीकृष्ण का दर्शन करने लगे । उन्हे विश्वास होने लगा । स्वामिनारायण आचार्य साक्षात् कृष्ण ही है । श्रीकृष्ण के होने पर खराब भ्रम नही होना चाहिए । अपना संकल्प सिद्ध हो जाये तो आचार्य श्रीकृष्ण होने पर कोई शंका नही है ।

एक समान सभी के विचार आने लगे । लेकिन आपस में लोग कह नही रहे है । आचार्य महाराज जान गये तथा कोठारी को आज्ञा दिये की अभी मोदी की दूकान पर जाकर सभी को ब्राह्मणो को पक्का सिधा दिलवाओ ।

कोठारी के साथ जाकर सभी ब्राह्मणोने सिधा लिया । महाराज को दण्डवत किये । अपने मन का संकल्प तथा स्वीकृति बी मिल गयी ।

महाराज वृंदावन मे कुछ दिन के लिये रुके । सभी मंदिरो का दर्शन करके विद्वान ब्राह्मणो के साथ सभा करके लोगो को दक्षिणा दिये । सभी को खुश किये ।

अपने आचार्य की लाल पगड़ी



- जी. वी. सीतापरा (अहमदाबाद)

प.पू. बड़े महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद की प्रेरणा से

पगडी किस लिये ? सिर पर पगडी पहनना मात्र सिर ढकने की प्रथा नही है। यह भारतीय संस्कृति विशेषकर गुजरात के गौरवशाली विरासत का प्रतीक है। पुराने समय से पगडी को पुरुष का सम्मान, शान, प्रतिष्ठा और ईज्जत का प्रतीक माना गया है। अलग-अलग राजा अलग प्रकार की पगडी सिर पर बाँधते थे। सौराष्ट्र के गाँवो में पोलिस पटेल और मुखी लोग आटेदार पगडी पहनते थे। वह उनके सम्मान की प्रतीक थी। किसान गाँव से बाहर जाते समय घुमावदार पगडी पहनते ते। यह सिर की अकस्मात से रक्षा करता था।

छपैयापुर मे बालप्रभु श्री घनश्याम महाराज ने सुवासिनी बा को बोले हे भाभी ! आप के कथनानुसार यदि हमे राज्य प्राप्त होगा तो आप का सम्मान करके वह राज्य आप को देकर सदैव आप के समीप रखूँगा।

समयान्तरे इस बात को सत्य करने के लिये वि.स. १८८२ मे आचार्य पद की स्थापना करके देश विभाग का लेख लिखवाकर धर्मवंशी आचार्य को सत्संग का राज्य दिये। त्यागी गृही सभी को गुरु पद दिये। दोनो आचार्यो को अपने आसन पर बैठाकर मूल्यावन आभूषण द्वारा सम्मान किये। उस समय अपने शास्त्रो में राजोपचार के चिन्ह में छडी, छत्र और चामर का वर्जन है। उस समय आचार्य पद के गौरव रुप में श्रीहरिने दोनो आचार्यश्री के शिर पर वही पगडी बाँधे थे। लाल पगडी का उल्लेख नही मिलता है। ऐसी श्रीहरि की आज्ञा भी नही है। श्रीहरि स्वयं अनंतकोटी ब्रह्मांड के अधिपति राजाधिराज होने से भक्तगणो के भाव के आधार पर दिये गये मुकुट या पगडी धारण करते थे।

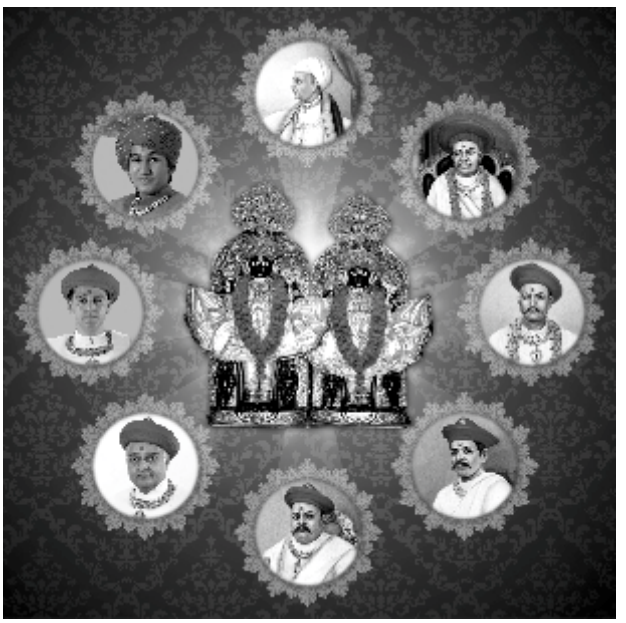
धर्मवंशी आचार्यश्री ने श्रीहरिने गृहस्थ बनाये है। आचार्यश्री जब सत्संग विचरण कते है। तब हम वर्तमान काल में दर्शन करते है। ऐसे सौम्य पोशाक पहनते है। उत्सव समैया प्रसंग पर छडी, छत्र अमूल्य नगीना जडित सोना का हार, लाल पगडी आदि राज्य प्रतीको से शोभा धारण धारण करके दर्शन करते है। लाल पगडी तो सत्संग हेतु सदैव धारण करते है। अपने घर पर गृहस्थ होने के कारण अपनी ईच्छानुसार वस्त्र धारण कर सकते है। तथा बड़े लोगो के साथ या शादी-विवाह मे शूट-बूट पहन सकते है। आचार्यश्री को कई प्रकार की जिम्मेदारी होने के कारण श्रीहरिने त्यागी संतो के लिये उस का नियम बनाये है। ऐसा कोई बंधनकारी नियम नही बनाये है। हाँ इतना नियम अवस्य है कि

घरे एवो वेष प्रगट दरसे पंडित तणो
न रारवे ते मेलो रजोगुण न रारवे पण घणो

आचार्यश्री पंडितो के पंडित है, ब्राह्मण है। बडे भक्त है। श्रीहरि का कुल है। अपर स्वरुप है। त्यागी-गृही के गुरु पद पर है। सम्प्रदाय के राजाधिराज है त्यागी संत उनके चरणो मे शीश झूकाते है। तब आचार्यश्री स्वच्छ तथा रजोगुणी वस्त्र धारण करते है। और आज तक चालू ही है। परम्परा से सुशोभित लाल पगडी आचार्यश्री का प्रतीक सी है। इस

पगडी का मूल कहाँ से है।

श्रीजी महाराज के समय राजा रजवाडे के समय मे विशेष कर महाराष्ट्र राजा मे दो प्रकार की लाल पगडी का चलन था। एक बाबाशाही पगडी तथा दूसरा गोड पगडी, बाबाशाही पगडी मराठी राजा पहनते थे। तपो गोड पगडी विद्वान ब्राह्मण पहनते थे। गुजरात मे इतना प्रचलन नही था। इस तरह की पगडी मुंबई में रहकर विशेषज्ञ बनाते थे। वडोदरा के राजा मूल मराठी होने के कारण उपर का आकार तसले के समान लाल पगडी पहनते थे। जो गूगल सर्च करके देख सकते है। और अपने शास्त्रो में वर्णन है कि श्रीहरि जब दोनो आचार्यो के साथ जब गायकवाड राजा के यहाँ गये थे। तो केसरिया गायकवाडी सादी पगडी पहने थे। उनके दो पुत्र मे से ११ वर्ष के गणपतराव भी सिरपर गायकवाडी पगडी पहने थे।



इस पधरामणी के समय दोनो नव नियुक्त आचार्यश्री ने सादा सौम्य श्वेत वस्त्र पहने थे। सरकारने देवघर के विशाल मंडप में विशाल स्वर्ण सिंहासन पर श्रीहरि को विराजमान किये थे। तथा सिंहासन के दाहिनी तरफ गद्दी के उपर श्री अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी दोनो आचार्यो को बैठाये। सरकारने श्रीहरि के लिये भारीजरी वाला वस्त्र, अमूल्य रत्न जटित काहने बड़ी गज मोती के अमूल्य हार से पूजा किये थे। इसके बाद सरकार ने अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरजी को पूजा पोडगल तथा थैली भरके सोने की मुहरे दिये थे।

प.पू. बड़े महाराजश्री से परम्परागत रुप से मिली सूचना के अनुसार महाराज सयाजीराव जब दोनो आचार्यो को छडी, छत्र, चामर आदी द्वारा राजोपचार विधि से पूजन किये। सिर पर गायकवाडी पगडी धराण करवाये थे।

धार्मिक शास्त्रो के आधार पर सरकार राज्य में सभी जगह सुबेदारो, वहीवटदारो तथा अधीनस्थ सभी राजाओ को आदेश भेजे थे कि स्वामिनारायण महाप्रभु स्वयं हमारे महल मे जहाँ भी जाये। वहाँ - वहाँ पर इसी तरह से सम्मान होना चाहिए। इस आदेश को कार्यालय मे लिख दे। जिससे महाप्रभु की गद्दी तथा आचार्य का उनके कुल की परम्परा है। जो सम्मान हंमेशा मिलना चाहिए।

अहमदाबाद गद्दी के आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज अति वैराग्यवान सदैव शांत होने के कारण लाल पगडी में नही दिखाई देते है। उस समय वह पगडी शेठ की पगडी के नाम से जानी जाती थी। प.पू. केशवप्रसादजी महाराजश्री की लाल पगडी वर्तमान समय के अनुसार थोडी-बड़ी अलग दिखाई देती है। उसी प्रकार वडताल गद्दी के आचार्य परम्परा की मे कुछ बदलाव है।

कारीगरो की पगडी बनाने की कला क्रमश बंद हो रही है। यह पगडी धर्मवंशी आचार्यश्री का सर्वोपरि प्रतीक

बन गया है । जब तक प.पू. बड़े महाराजश्री गद्दी पर विराजमान थे । तब बाहर से घर पर पधारने पर मातुश्री अपने बच्चे को नही लेकिन आचार्य के प्रतीक समान लाल पगडी की वंदना करती थी । इस प्रकार लाल पगडी तथा आचार्यश्री को प्रति समझ मे ओत-प्रोत हो गये ।

लेकिन समय बदलता रहता है । यह अपने साथ नही चलता है । कुछ समय हमें समय के साथ चलना पडता है । लम्बे भविष्य काल के बाद अपने भावि आचार्य महाराजश्री माथे पर विशेष प्रकार के विशेष सरल लाल पगडी मे आने वाली पीढी को दर्शन मिले या ना मिले । यह भविष्य की बात है । जो हम निश्चित नही कर सकते है । लेकिन समय के प्रवाह में कुशल कारीगरो की संख्या कम होती जा रही है । क्योकि जिस वस्तु की माँग बाजार में नही रहती है । उसका निर्माण कम हो जाता है । वर्तमान में अपने प.पू. महाराजश्री के पास लाल पगडी का स्टाक पूरा है । अभी भविष्य की कोई चिंता नही है । लेकिन बात यह है कि लाल पगडी श्रीजी माराज का बनाया कोई नियम नही है । ऐसी भी रीति-रिवाज के अनुसार परम्परा बनी गयी थी कि स्वयं के परिवार में सुख-दु:ख पर महाराजश्री हरा या नीला रंग की पगडी पहनते थे । जो प.पू. बड़े महाराजश्री तक चला था । यह धर्म-नियम के आधीन नही था । प.पू. लालजी महाराजश्री माथे पर साफा बाँदकर बाहर निकले । यह शास्त्रोक्त नियम नही है । जो युवा पीढी ने स्वीकार किया है । इसें इनक हृदय की विशाल भावना दिखाती है ।

अपने बड़े रीती-रीवाज के अनुसार, प्रादेशिक पहनावा टोपी-पगडी पहनते थे । जो वर्तमान काल में हम लोग नही पहनते है । इससे भक्ति में कोई कमी नही आती है । उसी प्रकार भविष्य में लाल पगडी की बात आये तो आचार्य पद पर कुछ प्रभाव नही आयेगा ।

श्रीहरि आचार्यश्री संत-हरिभक्त तीनो का त्रिभुज बनता है । सत्संग में सही अर्थ में सभी लोग परिवार की भावना से रहते है । आचार्यश्री सत्संग के बड़े है । श्रीजी महाराज के स्थान पर है । तीनो अंग में जितना प्रेम रहेगा तो सिंहोसान पर बैठे देव की कृपा हम सब पर अच्छी रहेगी । आचार्यश्री के पहनावे पर कोई प्रश्न होतो ? संत-हरिभक्त हाथ जोडकर नम्रता से विषेकी भाषा में पूछ सकते है । एकबार पूछे विवाद नही करे । शिक्षापत्री मे लिखा गया है । वह शिष्यो की संशय निवारण हैतु सदैव तत्पर है । शर्त मात्र यह है कि आप के समय निष्कपट होना पडेगा । अंत में

एक कपटीने तरे रे, महाराज, शरण आये सबही तरे।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज

श्री नरनारायणदेव देश के आगामी उत्सव

भादरवा सुद-११ मंगलवार ता. २२-९-२६ जलझीलणी एकादशी, श्री गणपतिजीनो विसर्जन वरघोडो।

भादरवा सुद-१२ बुधवार ता. २३-९-२६ श्री वामन जयंती, दोपहर १२ बजे आरती उतारना ।

भादरवा सुद-१५ शनिवार ता. २६-९-२६ मुकुटोत्सव पूनम ।

भादरवा वद-११ मंगलवार ता. ६-१०-२६ ईन्दीरा एकादशी उपवास ।

भादरवा वद-३० शनिवार ता. १०-१०-२६ दर्श अमावास्या, अमावस्या की श्राध्ध, सर्व पितृ श्राध्ध ।

आसो सुद-२ सोमवार ता. १२-१०-२६ श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का गादी अभिषेक (सं. २०६० अहमदाबाद), बद्रीनाथ धाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव (सं. २०३७) ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-अगस्त-२६

ता. १-०८-२०२६	प.भ. व्योमेश जगदीशभाई पटेल - रामनगर नरोडा।
ता. २-०८-२०२६	प.भ. निक्की विष्णुभाई पटेल - गुलाबपुरावाला - चि. किस्वीना जन्म दिवस निमित्ते।
ता. १५-०८-२०२६	श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - कालुपुर मंदिर हवेली - ह. अरूणाबेन।
ता. १६-०८-२०२६	सत्संग समाज श्री स्वामिनारायण मंदिर - हिंमतनगर - ह. महंत स्वामी सद्गुणदासजी।
ता. २२-०८-२०२६	प.भ. पटेल दिनेशभाई पुरुषोत्तमभाई - हिंमतनगर।
ता. २६-०८-२०२६	प.भ. अ.नि. अनसुयाबेन घनश्यामभाई पटेल - कनीपुर-गांधीनगर।
ता. २७-०८-२०२६	प.भ. हरेशभाई नानजीभाई लींबाणी - पूना।
ता. २८-०८-२०२६	प.भ. अ.नि. धीरूभाई हरजीवनदास सोनी - वाघोडीयावाला - ह. घनश्यामभाई, हरिकृष्णभाई, हेमंतभाई तथा नारायणभाई।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - अगस्त-२०२६

रू। १,००,०००/-	श्रीमती रंजनबेन कांतिभाई पटेल - ओकलेन्ड-न्युझीलेन्ड - ह. श्री राकेशभाई तथा श्री दिपकभाई।
रू। ५१,०००/-	प.भ. परेशकुमार रमणलाल पटेल (कुंडालवाला) ६१ मां जन्म दिवस निमित्ते - हाल अहमदाबाद।
रू। ५१,०००/-	प.पू. मोटा महाराजश्रीना राजीपार्थे प.भ. प्रज्ञेश दिनेशभाई पटेल परिवार - सरपंचश्री अडालज।
रू। ५५,०००/-	प.पू. मोटा महाराजश्रीना राजीपार्थे हस्ते - प.भ. प्रविणभाई डाह्याभाई पटेल परिवार - झुंडाल।
रू। ५०,०००/-	प.भ.श्री कपीलाबेन चंदुलाल पटेल तथा गायत्री जीगरकुमार - अहमदाबाद।
रू। ५०,०००/-	प.भ.अ.नि. सोनी कांताबेन चुनीलाल दुर्लभजी - हस्ते श्री जयेन्द्रभाई सोनी - पलीयडवाला।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૯૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com



॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "परमात्मा का बनाया संसार न्याय स्वरुप है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी गृहस्थ है। कभी-कभी जिम्मेदारी पूर्ण करते करते कंटाल जाते है। नरनारायणधेव का दर्शन करने जाने पर शिकायत अधिक हो जाती है। खराब अवस्था में से कैसे निकला जाता है। यह क्यो करना पडता है ? इस प्रकार अपनी शिकायत चलती रहती है। भगवान जो करते है वह दिखाई नही देता है। हम किस प्रकार डॉक्टर के पास जा कर बीमारी बता देते है। लेकिन कोई बड़ा आपरेशन होने पर टेबल पर लेट जाते है। आपरेशन थियेटर में आपरेशन के समय हमे पता नही चलता है। क्योकि व्यक्ति बेहोशी की अवस्था में रहता है। हम डाक्टर के उपर छोड देते है। आपरेशन के बाद पूछते है आप ने क्या किया ? यहि डॉक्टर पहले बता दे। तथा आरेशन देखने की छूट दे दो। क्या आप ऐसा होने देगे ? इसी प्रकार भगवान के सामने अपना कष्ट कह देना चाहिए। श्रद्धा रखना चाहिए। ऐसा नही पूछना चाहिए की खराब अवस्था से बाहर लाने के लिये क्या कर रहे है। भगवान भी पता नही चलने देते है। नही तो हम घबरा जायेगे। भगवान डा. की तरह अच्छा ही करते है। भगवान प्रयत्नशील है। १००% हमारी शरणागति होनी चाहिए। कर्ता-हर्ता भगवान ही है। हमे जन्म-मृत्यु देते है। यह अपने हाथ की बात नही है। हम सब को भगवान ने अधिक दिया है। चिंता छोडकर भजन-भक्ति करे और शरणागति १००% रखे। श्रद्धा रखकर अपना सत्कर्म करते रहना चाहिए। हम कितना भी अपनी बुद्धि लगाये। भगवान की कला को नही जान सकते है। अधिक बुद्धि नही लगाना चाहिए। महा भारत के समय अर्जुन भ्रम में थे। कि युद्ध करु या नहि करु। तब कृष्ण भगवानने कहा कि ''अपनी बुद्धि और मन मुझे दे दो।'' प्राय: हम सभी भौतिक शरणागति स्वीकार करते है। मन और बुद्धि के साथ शरणागति नही होती है। उसे पूर्ण शरणागति नही कहते है। पूर्ण शरणागति मे भगवान के प्रश्न नही रह जाता है। परीक्षित राजा जब शुकदेवजी से कथा सुन रहे थे। तब राजा ने प्रश्न किया कि ''भगवान समदर्शी है।'' उनके लिये सभी समान है। देव-दावन, मनव तथा उनके शत्रु मित्र नही है। किसी के साथ कटूता नही तो देवताओ के लिये क्यो दानवो वध किये थे। तब शुकदेवजी ने कहा आपके बाबा युधिष्ठिर ने यही प्रश्न शिशु पाल के वहा के समय कहे थे। भगवान के किसी जाति के प्रति प्रेम-द्वेष नही रखते है। असुर भी जब भगवान की भक्ति करते है तो भगवान रक्षा करते है। भगवान भक्त के पक्ष वाले है। शरणागत की रक्षा करते है। भक्त प्रहलाद असुर के बच्चे थे। तो भी भगवान के भक्त थे। भगवानने उकी रक्षा की थी। जो व्यक्ति सत्य के मार्ग पर चलता है। धर्ममय जीवन व्यतीत करता है। उसकी रक्षा भगवान करते है। भगवान के हाथ से जिसका वध होता है। वह भगवान के धाम में जाता है। वे करुणा निधान है। जिसको मारते है। साथ ले जाते है। यहाँ पर भक्त प्रहलाद का उदाहरण देखे। उसी प्रकार दैत्य में शिशुपाल को देखे। पांडवोने जब राजसूय यज्ञ किया था। तभी निश्चित हो गया था कि पहले पूजा किसकी करे। तभी भीष्मपितामह, द्रोहणाचार्य, कृपाचार्य सहित सभी ने

कहा कि ''श्रीकृष्ण ही सर्वोत्तम है। तब भगवान श्री कृष्ण की अग्रपूजा हुई। शिशुपाल क्रोधित हो गया। श्रीकृष्ण भगवान शांत रहे। शिशुपाल के गलती की गणना करते रहे क्यो शिशुपाल की माँ कृष्ण भगवान की बुआ थी। उसे ज्ञात था कि शिशुपाल का वध श्रीकृष्ण के हाथ से ही होगी। इस लिये कृष्ण भगवानने उन्हे वचन दिया था कि ''मे शिशुपाल का सौ अपराध माफ कर दूँगा।'' जब क्रोध में शिशुपाल ने भगवान श्रीकृष्ण को १०१ बार गाली दिया तो भगवान के हाथ से सुदर्शन चक्र छोडे और एक पल में शिशुपाल का सिर शरीर से अलग होग या। शिशुपाल के शरीर मे स्थित तेज वाली आत्मा कृष्ण के शरीर मे विलीन हो गयी। तब युधिष्ठिर ने पूछा कि गाली देने वाले शिशुपाल का आपने कल्याण को किया। तब कृष्ण भगवान ने उत्तर दिया। शिशुपाल शत्रु भाव से भी मेरा चिंतन कर रहा था। मेरे स्वरुप का चिंतन करने वाले का कल्याण कर देता हूँ। भगवान का नाम लेने से कल्याण हो जाता है। जिस प्रकार अग्नि का स्वभाव जलाना है। भूल से लग जाये तो भी जलता है। स्पर्श से भी जलता है। इसी प्रकार भगवान का स्वभाव कल्याण करने वाला है। जिस प्रकार भक्ति करेगे। वैसा ही कल्याण होगा। दैत्य हो या देवता भगवान सबका कल्याण करते है। परमात्मा द्वारा बनाये गये संसार ''न्याय स्वरुप है। भगवानने इस सृष्टि की रचना किये है। उसी प्रकार सभी को न्याय मिलता है। अपने कार्यो की सजा सभी प्राप्त करते है। भगवान जो कुछ करते है। प्रकृति को संतुलित रखने के लिये करते है। जिस प्रकार शरीर का संतुलन बनाने के लिये सब कुछ चाहिए। मीठा, खट्टा, तीखा उसी पर्कार पुरी सृष्टि सत्वगुण, रजोगुण और तमो गुण से चलता है। सभी वस्तुए एक अनुपात मै होनी चाहिए। शरीर में बी.पी. अधिक कम नही चलती है। शरीर में वस्तुओ की एकमात्र होती है। एक अनुपात होता है। प्रयोग शाला में सबकी एक सामान्य रेंज होती है। इस तरह पूरी सृष्टि भगवान की शरीर कहा जाता है। वाल्मिकी रामायण में भगवान का नाम विश्वस्वरुप बताया गया है। पुरी सृष्टि में रजो, तमो, सतो गुण का संतुलन रहे तब संतुलित चलता है। सतोगुण बढने से ऋषि, तपस्वी की संख्या बढ जाती है। लेकिन संतुलन के लिये भगवान जब असुरो को शक्ति देते है। तब तमोगुण बढ जाता है। जब अतिशय हो जाता है तो स्वंय अवतार लेते है।

प्रारम्भ मे जो बात की गयी। हम दर्शन करने जाते है। भगवान के सामने शिकायत करते है। खराव विचार भगवान के उपर नही रखना चाहिए। अच्छा विचार भगवान की कृपा है। वह अपने हाथ की बात नही है। अच्छे विचार आने पर व्यवहार मे परिवर्तन लाना चाहिए। सद्‌बुद्धि आने पर भगवान की बड़ी कृपा होती है। इस कृपा के लिये भगवान का धन्यवाद करना चाहिए।

●

श्रेष्ठ भक्ति

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

एकबार मनुष्य बोलता है कि मै श्रेष्ठ हूँ। पशु-पक्षी कहे हम श्रेष्ठ है। इसी मे एक दिन मनुष्य पक्षी की सभा हुई। सभी मनुष्योने कहा हमारी चाल सबसे अच्छी है। तो हिरणने कहा रहने दे। आप चलते है तो कहा जाता है कि हिरण की छलांग लगा रहे है। इसलिये इसमे हम जीत गये। आप हार गये। मानव बोला हमारी वाणी अच्छी है। तो कोयल ने कहा रहने दो। आप बोलते है तो कोयल की वाणी की उपमा दी जाती है। कि कोयल की तरह मीठा बोलता है। मै जीती और आप हार गये। आदमीने कहा

अच्छा है। आदमी ने कहा हमारी नाक अच्छी है। तो तोते ने कहा लोग कहते है कि इनकी नाक तोते के चोंच के समान है। मुझसे तुलना मत करे। हम जीत गये और आप हरा गये। मानव बोला कि हम कपडा पहनकर सुंदर लगते है। मोरने कहा कि हम बिना कपडा पहने ही सुंदर लगते है। आप इसमें भी हार गये है। मानव बोला कि हम भगवान की भक्ति करते है। माला तथा भजन-कीर्तन करते है। अब कुछ आप लोगो को बोलना है। सभी पशु-पक्षी बोले इसमे विजय आप की है। कि हम से भक्ति नही की जा सकती है। मानव योनि में जन्म लेकर भक्ति करके भवसागर पार करेगे।

यदि अपना जन्म पशु-पक्षी के रुप में होता तो कुछ नही कर सकते है। मानव योनि में भक्ति-भजन दान, पुण्य, कथा-वार्ता सब कुछ कर लेना चाहिए। मानव जन्म तो देवता लोग भी माँगते है। मानव शरीर देवो को भी दुर्लभ है।

मनुष्य अवतार मे सत्संगी के घर जन्म हो तो वह पूर्वजन्म का पूण्य होता है। इस जन्म मे भक्ति रस का पान करना चाहिए। श्रीजी महाराजने गढडा मध्य प्रकरण-५२ पर वचनामृत में लिखे है। श्रद्धा युक्त एवं ईर्ष्या रहित भक्ति करे तो भगवान खुश होते है।

गोखरवाला गाँव में एक विप्र रणछोडभाई, मन, कर्म वचन से भगवान की मर्जी मे रहते थे। कुछ भक्तो को इस में से एक गुण होता है। किसी मे भक्ति रहती है। हम आप के है जो आप कहेगे वह हम करेगे। लेकिन एक भी आज्ञा का पालन नही करते है। वे वाणी के भक्त होते है। कुछ कर्म से भक्त होते है। कार्य हो तो बोलना। देवदर्शन पूजा पाठ कुछ भी नही करते है। कुछ मन से भक्त होते है। वे हृदय में अखंड भगवान को याद करते है।

एक बार रणछोडभाई अपने समधी के गर गये। रात में भोजन करके सो गये। प्रातः स्नान करके वरामदे मे आसन लगाकर पूजा के लिये ठाकुरजी को रखे। आँख बंद करके पूजा करने लगे। इस बीच मजाक में समधीने भगवान को वहाँ से हटाकर उस स्थान पर चप्पल रख दिये। पूजा करने के बाद रणछोडजीने आँख खोला तो भगवान के स्थान पर चप्पल देखे तो दुःखी हो गये। मेरे प्राण प्रिय भगवान को कोई ले गया। आप पास देखे तो समधी हँस रहे थे। पाप करके हँसता है दुष्ट। पाप करके सज्जन लोग पश्चाताप करते है। खराव कार्य करके हँस रहे हो। तुम अभी अंधो हो जाओ। समधी दोनो आँख से अंधे हो गये। सजा दे दिया। अब समधी पश्चाताप करने लगा। महिमा बिना भक्ति बिजली की तरह होती है। महिमा बिना भक्ति अज्ञान रुपी अंधेरे में बदल जाती है। भघवान के हाथ में अपना हाथ सोंप देने से जीवन धन्य बन जाता है। भगवान अपना हाथ कब पकडते है। आत्मा परमात्मा रुपी नाम का प्रकाश हो, अन्तकरण शुद्द हो तब प्रभुहाथ पकडते है। संसार सम्बन्धी वासना हृदय मे रहने पर हाथ नही पकडते है।

आज कल हम देखते है मानव अपनी शरीर को स्वस्थ रखने के लिये कई प्रकार का उपाय करता है। सब आत्मा- जीवात्मा को बलवान बनाने की बात आती है तो वह रुक जाता है। ब्रह्मानंद स्वामी बताते है कि कीर्तन में जो -

"यूं ही जन्म गुमात भजन बिन, यूंही जन्म गुमात
समज समज नर मूढ अज्ञानी, काळ निकट चली आत... भजन
अयोरी बे हाल फिरत है, निशदिन गुण विषयन के गात....भजन

ब्रह्मानंद स्वामी कहते है कि हे मूढ, हे अज्ञानी तुम बिना भजन के क्यो जीवन व्यर्थ कर रहा है ? काल तुम्हारा भक्षण किये जा रहा है। इसे समझ लो। विषय के गुणगान करके धुम रहे हो। इसे छोडकर परमार्थ के कार्य में लग जाओ। मोक्ष की तरफ आगे बढो। शांति भगवान की भजन से आती है। ईर्ष्या रहित भक्ति करे। भगवान को खुश करके जीवन धन्य बनाये।

●

पुल्हाश्रम

- लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

(श्रीहरि वन विचरण गतांक से प्रारम्भ)

वर्णीराज वन-पर्वतो तथा झरनो की शोभा देखते-देखते अनंतजीवो की दृष्टि से, अनंतजीवो के स्पर्श से मोक्ष देते देते आगे बढ रहे थे। पुल्हाश्रम पहुँचना हो जहाँ पर पुलहमुनि का आश्रम है। वहाँ पर :षभदेव के पुत्र भरतजी तप किये। उस स्थान पर श्रीहरि चलते-चलते पहुँचे ते। सर्व प्रथम मुक्तनाथ का दर्शन किये। तथा गंडकी के किनारे जिस स्थान पर भरतजीने तपस्या किया था। उस स्थान पर बाँहे उपर रखकर एक पैर पर खडे होकर गायत्री का जप करते करते तपस्या करने लगे। लेकिन भरतजी को ध्यान करते समय बंधन लडा था। जिस कारण तीन बार जन्म लेना पड़ा था। यह बात पुरंजन की कथा याद करते थे। माया से सदैव सावधान रहना चाहिए।

इस प्रकार वर्णीराज तप द्वारा बता रहे है। यदि परमधाम को प्राप्त करना है तो आसक्ति, ईच्छा का त्याग, तथा सदैव सावधान प्रभु भक्ति करने पर संसार सागर से पार हो सकते है। तथा परमधाम की प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार संसारी और त्यागी को उपदेश दे रहे है। वर्णीराज तपस्या क्यो करना चाहिए। यह कारण बताये। यहाँ पर वर्णीराज चार मास तक पत्ते, फूल, फल, हवा लेकर तपस्या किये। बड़े-बड़े साधु ऋषि महंत तप देखकर बोले कि ''जैसे दिनकर के सामने दीपक की तरह हमारी तपस्या लग रही है।'' सूर्यनारायण भी हाथ मे कमल पुरुष लेकर पूर्ण सजावट के साथ वर्णीराज के दर्शन हेतु पधारे थे। श्रीहरि और सूर्यनारायण का मिलन इस गंडकी नदी के किनारे पर हुआ था। आपस मे मिलकर खुश हुए। आपस मे प्रशंसा कर रहे है। मै आप का दास हूं। ऐसा बोलकर शरण को नमन किये थे। द्वादशी के दिन पारणा करके वर्णीराज आगे बढे थे।

आज पुल्हाश्रम की यात्रा सरल हो गयी है। वहाँ पर आक्सीजन कम मिलता है। पर्वत पर चढाई है। पहेले कैसा रहा होगा ? वर्णीराज कहते है कि जिसे जप प्राप्त करना है। वह लाखो-करोडो तकलीफ के बाद भी लक्ष्य को प्राप्त करता है।

केवल धर्मादा के लिये QR Code



अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के कोठार में अपना दशांश-विशाश धर्मादा के लिये यह QR Code है। जो मात्र धर्मादा के लिये है। सभी हरिभक्त ध्यान दे।

सत्संग समाचार

प.पू. लालजी महाराजश्री का २१ वाँ प्रगटोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्यमें तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महराजश्री का २९ वाँ प्रगटोत्सव अषाढ वद-१० को तारीख ८-८-२०२६ शनिवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

प.पू. लालजी महाराजश्री सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती उतारकर दर्शन करके सभा में विराजमान हुए। विद्वान विप्रो द्वारा स्वस्तिवाचन विधिवत रुप से किया गया था। विद्वान संत-अग्रगण्य हरिभक्त, समिति के सदस्यो ने समूह आरती उतारे थे। अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी आदि लोगोने शुभेच्छा प्रदान किये थे। नारणघाट मंदिर के शा. सत्यसंकल्पदासजी ने सभा का संचालन किया था। अन्त में पूरे धर्मकुल ने सभा को आशीर्वाद दिये थे।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विश्वका सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर में श्रावण मास की कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विश्व के सर्वप्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में प्रसादी के सभा मंडप में श्रावण मास की विशेष श्रीम्द भागवत कथा ब्रह्मचारी शास्त्री स्वामीआदिश्वरानंजी गुरु ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी (ठाकोरजी के पूजारी) के द्वारा सुंदर शैली में कथामृत का पाठ कराये।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विश्व के सर्व प्रथम अहमदाबाद मंदिर में महादेवजी का बेल पत्र से पूजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के समक्ष बिराजमान श्रीहरि प्रतिष्ठित श्री महादेवजी का पूरे श्रावण मास विद्वान विप्रो द्वारा बेल के पत्ते द्वारा पूजा-अर्चना विधिवत रुप से पूर्ण की गयी थी। इस में कई हरिभक्तोने लाभ उठाया था। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भव्य हिंडोला दर्शन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परमकृपालु श्री नरनरायणदेव के शुभ सानिध्य में ्षाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक लगातार एक मास तक श्री बालमुकुन्द भगवान को प्रति दिन अलौकिक हिंडोला की सजावट करके झुलाया जाता था। हरिभक्तो को हिंडोला की आरती उतारने का लाभ मिला। हरिभक्त खुश हुए शहर और गाँव के हरिभक्त हिंडोला की आरती उतारने का लाभ मिला। हरि भक्त खुश हुए। शहर और गाँव के हरिभख्त हिंडोला का दर्शन करके खुश हुए । हिंडोला की पूरी सेवा में प.भ. रणजीतसिंह दरबार, हार्दिक राजपुरोहित, पर्व दरजी, कार्तिक परीख, शिशिर परीख, निलेष खरसाणी, चिराग पटेल, वासुदेवभाई सोनी, जीतु पटेल, ब्रिजेश पावरा, संजय वंडरा, विजय सोलंकी, घाटलोडिया युवक मंडल, मनीषभाई गोरसीया, जगदीशभाई पटेल, तेजलबेन पटेल, आर.सी. टेकनिकल सत्संग मंडल, मनीषाबेन भावसार, योगेशभाई भावसार, किरीटभाई भावसार, मोटेरा महिला मंडल, आदिश्वरनगर युवक मंडल, बापुनगर महिला मंडल, अक्षय पटेल, नारायणघाट युवक मंडल, राजुभाई पटेल, कौशिकभाई पटेल, हरेशभाई ठक्कर परिवार, हेमंत सरदार (बंगाली) आदि ने सेवा दिया था।

हिंडोला के यशश्वी यजमानश्रीओ : अषाढ वद-२ ता. ३१-७-२६ शुक्रवार फुलना हिंडोला के यजमानश्री : (१) अ.नि. उर्मिलाबेन बालजीभाई पटेल - हस्ते : राजुभाई पटेल (कोटेश्वर) - प्रेरक : महंत स्वामी (२) प.भ. प्रित नंदुभाई पटेल (मोटेरा) - प्रेरक : महंत स्वामी (३) प.भ. लत्ताबेन घनश्यामभाई मारू (बोपल) (४) प.भ. वसंतीबेन नारायणभाई पटेल. अषाढ वद-३ ता. ०१-८-२०२६ शनिवार पेचना हिंडोला के यजमानश्री : प.भ. अशोकभाई देवराजभाई मालवीया - हस्ते : निरूपाबेन अशोकभाई मालवीया. अषाढ वद-४ ता. ०२-०८-२०२६ रविवार राजहंसना हिंडोला के यजमानश्री : (१) प.भ. विष्णुभाई एच. पटेल (राणीप) प.भ. अमृतभाई एच. पटेल (देउसणा) (२) प.भ. अल्पेशभाई दिपकभाई पटेल (अहमदाबाद). अषाढ

वद-५ ता. ०३-०८-२०२६ सोमवार रेशम दोरीना हिंडोला के यजमानश्री प.भ. दक्ष अमीनभाई पटेल (राणीप). अषाढ वद-६ ता. ०४-०८-२०२६ मंगलवार रंगोलीना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. अरीका जीतेश पटेल - हस्ते सुमनभाई पटेल (साबरमती-अमेरिका) (२) प.भ. खुशीबेन देव पटेल - हस्ते दिलीपभाई पटेल (गुलाबपुरा) (३) प.भ. तरलाबेन अतुलभाई पोथीवाला. अषाढ वद-७ ता. ०५-०८-२०२६ बुधवार माचीसनी सलीना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. मनिष जीतेन्द्रभाई चोकसी (२) चि.पूजन तथा मूर्ति (अमेरिका) हस्ते प्रिया चिंतलकुमार पटेल प्रेरक : जे. पी. स्वामी. अषाढ वद-८ ता. ०६-०८-२०२६ गुरुवार झरीना हिंडोला के यजमानश्री प.भ. प्रवेशभाई मणीलाल सोनी हस्ते - हसमुतीबेन प्रवेशभाई सोनी, संजयभाई प्रवेशभाई सोनी. अषाढ वद-९ ता. ०७-०८-२०२६ शुक्रवार पेपर आर्टना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. चौधरी माहीर रमेशभाई हस्ते : महंत स्वामी (पी.पी. स्वामी) (२) प.भ. पटेल खेमाभाई करशनभाई (डुंगरी) प्रेरक : महंत स्वामी (पी.पी. स्वामी). अषाढ वद-१० ता. ०८-०८-२०२६ शनिवार चोकलेटना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. अक्ष रवि पटेल (देलवाडावाला-अहमदाबाद) हस्ते : सरोजबेन मुकेशभाई पटेल प्रेरक : महंत स्वामी. अषाढ वद-११ ता. ०९-०८-२०२६ रविवार सुकोमेवाना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. गीरीशभाई घनश्यामभाई पटेल - हस्ते सन्नी तथा रवि पटेल (२) प.भ. मगनभाई जी. जागाणी - ह. अश्विनभाई (अहमदाबाद) (३) अ.नि. रसिकभाई राजाभाई झवेरी परिवार प्रेरक : ब्रह्मचारी राम स्वामी (४) प.भ. मयुरभाई भाईलालभाई पटेल हस्ते : कथन मयुरभाई पटेल - प्रेरक : महंत पी.पी. स्वामी (५) प.भ. नितीन रणछोडभाई पटेल हस्ते : वेदांत तथा ओम एन. पटेल (६) प.भ. अशोकभाई के. देसाई (अहमदाबाद). अषाढ वद-१२/१३ ता. १०-०८-२०२६ सोमवार नंगना हिंडोला के यजमानश्री प.भ. राजेशभाई घनश्यामभाई चोकसी हस्ते - जैमिन तथा सन्नी चोकसी. अषाढ वद-१४ ता. ११-०८-२०२६ मंगलवार शाकभाजीना हिंडोला के यजमानश्री (१) श्री नरनारायण महिला मंडल जुनु - राणीप (२) प.भ. रमीलाबेन प्रविणभाई देवाणी (निकोल) हस्ते : जे. पी. स्वामी (३) प.भ. चंद्रकान्तभाई जयंतीलाल ठक्कर हस्ते : मिलन चंद्रकान्तभाई ठक्कर. अषाढ वद-३० ता. १२-०८-२०२६ बुधवार चोकलेटना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. रावजीभाई मणीभाई पटेल (मोटेरा-झुंडालवाला) (२) श्री नरनारायणदेव चरण सेवक प्रेरक : ब्र. स्वामी घनश्यामप्रकाशानंदजी. श्रावण सुद-१ ता. १३-०८-२०२६ गुरुवार फूलना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. शारदाबा शेलत - हस्ते : अस्मिताबेन शेलत परिवार - प्रेरक : सां.यो. मंजुबा तथा भारतीबा (२) प.भ. कृपा कीर्तनभाई पटेल (नारणपुरा) (३) प.भ. गांडाभाई कालीदासभाई पटेल, सीताबेन गांडाभाई पटेल (गुलाबपुरावाला). श्रावण सुद-२ ता. १४-०८-२०२६ शुक्रवार डायमंड पेचना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. भरतभाई गांडाभाई पटेल (सोलावाला) हस्ते - ललीताबेन बी. पटेल (२) प.भ. अल्पेश रमेशचंद्र भावसार (जन्म दिवस निमित्ते) - हस्ते : मोनाक भावसार (३) प.भ. नरेन्द्रभाई पुरषोतमभाई पटेल (काशीन्द्रा) (४) प.भ. उत्तम रमेशभाई केराई (जन्म दिवस निमित्ते). श्रावण सुद-३ ता. १५-०८-२०२६ शनिवार तिरंगा ध्वजना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. भरतभाई हीरजीभाई देकावडीया (जन्म दिन निमित्ते) (२) प.भ. सहज दिनेशभाई पटेल (सायन्ससीटी) (जन्म दिन निमित्ते) (३) प.भ. अनंत अरजणभाई रादडीया (निकोल) (४) प.भ. टांक धनल किरीटभाई (५) (सी.ए.) रिध्धि प्रशांतभाई परमार - हस्ते : हेमलत्ताबेन पी. परमार - प्रेरक : शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (से-२३ गांधीनगर) (६) प.भ. नयनाबेन विनोदकुमार मोदी - हस्ते : तत्वज्ञ मोदी. श्रावण सुद-४ ता. १६-०८-२०२६ रविवार चलणी नोटना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. प्रकाशभाई पी. पटेल (चैनपुर) प्रेरक : महंत स्वामी (२) प.भ. रघुवीरभाई नविनचंद्र अमीन (३) प.भ. चिंतन विष्णुभाई पटेल (जन्म दिन निमित्ते) (चांदखेडा-ओस्ट्रेलीया) - हस्ते : तपन पटेल - प्रेरक : महंत स्वामी श्रावण सुद-५ ता. १७-०८-२०२६ सोमवार रूद्राक्षना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. सोनी हिरेन हिरालाल (२) प.भ. प्रयाग धवलभाई ठक्कर (सेटेलाईट-अहमदाबाद) हस्ते : धवलभाई कांतिलाल ठक्कर (३) प.भ. जीतेन्द्रभाई अरविंदभाई जानी (४) प.भ. कमलेशभाई बचुभाई पटेल परिवार (डींगुचावाला) हस्ते : आश्वि तरूणभाई पटेल - प्रेरक : जे.पी. स्वामी (५) श्री नरनारायण युवक मंडल (कोकणोल)- हस्ते : हर्षदभाई तथा भावेशभाई (६) प.भ. धनूषभाई जीतेन्द्रभाई राघनपुरा - प्रेरक : ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी. श्रावण सुद-६ ता. १८-०८-२०२६ मंगलवार मुखवासना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. मेहुल अशोकभाई ठक्कर (अहमदाबाद) (२) प.भ. पूजन राजुभाई

पटेल (जन्म दिन निमित्ते) (पोरवाला-साबरमती). श्रावण सुद-७ ता. १९-०८-२०२६ बुधवार फ्रूटना हिंडोला के यजमानश्री (१) महेशकुमार डायाभाई एन्ड कंपनी (माधुपुरा) (२) प.भ. निलेषभाई परषोत्तमभाई पटेल(लालोडा) हस्ते : दर्श तथा दित्वी. श्रावण सुद-८ ता. २०-०८-२०२६ गुरुवार मयुरकलाना हिंडोला के यजमानश्री प.भ. नीलाबेन चीकाभाई खरसाणी (अहमदाबाद). श्रावण सुद-९ ता. २१-०८-२०२६ शुक्रवार सूकोमेवाना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. नितीनभाई रणछोडभाई पटेल हस्ते : रीनाबेन एन. पटेल (२) लीलाबेन मनुभाई पटेल (अमेरिका) - हस्ते : प्रज्ञेशभाई पटेल (३) प.भ. नागजीभाई शामजीभाई गोलकीया (वस्त्राल) हस्ते : आशिषभाई नागजीभाई गोलकीया. श्रावण सुद-१० ता. २२-०८-२०२६ शनिवार लीपण आर्टना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. पर्व चिरायु देवाणी (निकोल) हस्ते : जे.पी. स्वामी (२) प.भ. भारतीबेन दिनेशभाई जोषी (शिकागो) हस्ते : हार्दिक दिनेशभाई जोषी परिवार (वहेलाल) प्रेरक : जे.पी. स्वामी. श्रावण सुद-११ ता. २३-०८-२०२६ रविवार पवित्राना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. खुशालीबेन विशालकुमार गोरसीया (जन्म दिन निमित्ते) हस्ते : कनुभाई साचाणी, शौर्य गोरसीया (निकोल) - प्रेरक : महंत पी. पी. स्वामी (२) प.भ. मितेषकुमार रसिकलाल पटेल - हस्ते : प्रिशा पटेल (३) प.भ. कामीनीबेन जीतेन्द्रभाई पटेल (कैयल) हस्ते खीशा तथा मोक्ष (४) अ.नि. भानुबेन बंसीभाई पटेल हस्ते : संजयभाई बंसीभाई पटेल - प्रेरक बालकृष्ण स्वामी (मेतपुरवाला) (५) प.भ. गौरीबेन अमृतभाई पटेल - हस्ते : जतीन तथा साजन पटेल परिवार (६) गं.स्व. शारदाबेन प्रभुदास माणेक - हस्ते : जयेशभाई माणेक. श्रावण सुद-१२ ता. २४-०८-२०२६ सोमवार डायमंडना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. राज बिपीनभाई ठक्कर (२) अ.नि. हंसाबेन तथा अ.नि. जयंतिलाल जे. शाह (पुण्यतिथि निमित्ते) (फुल मंडली) हस्ते : डॉ. सतिषभाई शाह (अमेरिका) - प्रेरक : महंत पी.पी. स्वामी (३) प.भ. पटेल कैलासबेन अंबालालभाई (गवाडावाला) (जन्म दिन निमित्ते) (४) प.भ. करशनभाई कानजीभाई राघवाणी (अहमदाबाद). श्रावण सुद-१३ ता. २५-०८-२०२६ मंगलवार मोतीना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. पटेल वियान अमितभाई - हस्ते : घनश्यामभाई (२) अ.नि. हंसाबेन बाबुलाल सोनी - हस्ते : दर्श अश्विनभाई बाबुलाल सोनी (सरावाला) - प्रेरक : जे.पी. स्वामी (३) हवेली महिला मंडल - कालुपुर - हस्ते : आशाबेन कमलेशभाई शाह (४) प.भ मंजील हसमुखभाई मिस्त्री (अहमदाबाद) (५) प.भ. घनश्यामभाई चिमनभाई दक्षिणी - हेतना जन्मदिन निमित्ते हस्ते : महंत पी.पी. स्वामी. श्रावण सुद-१३ ता. २६-०८-२०२६ बुधवार कंतान आर्टना हिंडोला के यजमानश्री (१) अ.नि. जयंतिलाल कानजीभाई ठक्कर(बावला) (२) प.भ. वसंतराय नारणदास मामतोरा हस्ते : ऋषि प्रकाशभाई मामतोरा (३) प.भ. गौतमभाई लक्ष्मीचंदभाई ठक्कर - प्रेरक : शास्त्री स्वामी हरिप्रियदासजी (से-२३ गांधीनगर). श्रावण सुद-१४ ता. २७-०८-२०२६ गुरुवार काचना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. ब्रजेशभाई रसिकलाल भावसार हस्ते : मंथन, विनय, निशा, सोनल (२) प.भ. हेमीबेन बी. पटेल (३) प.भ. जीवीबा चंदुलाल (अहमदाबाद) हस्ते : सांख्ययोगी मंजुबा - हवेली. श्रावण सुद-१५ ता. २८-०८-२०२६ शुक्रवार राखडीना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. सुमितभाई ठक्कर (अहमदाबाद) - प्रेरक : ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी (२) प.भ. धर्मेन्द्रभाई घनश्यामभाई (मेडा) - हस्ते : सचिन, विरल, रेयांश तथा परिवार (३) प.भ. राजेशभाई रणछोडभाई पटेल (साबरमती) (४) प.भ. गोपालभाई नारणभाई वेकरीया - हस्ते : उमेश गोपालभाई वेकरीया - प्रेरक : ब्रह्मचारी स्वामी रामेश्वरानंदजी (५) प.भ. प्रिन्स सतीषभाई पटेल (६) प.भ. घनश्यामभाई मणीभाई ठक्कर (बावला) - हस्ते : वियान ठक्कर (७) प.भ. अक्षय उपेन्द्रभाई पटेल, अमीबेन अक्षय पटेल, उपेन्द्रभाई बी. पटेल (अहमदाबाद - घमीजवाला) (८) प.भ. कल्पेशभाई वेलजीभाई हडीयल - ह. यश्वी कल्पेशभाई हडीयल (चराडवा) (९) प.भ. अमरकुमार विष्णुप्रसाद पटेल - हस्ते : देवष्यकुमार पटेल. श्रावण वद-१ ता. २९-०८-२०२६ शनिवार वासणना हिंडोला के यजमानश्री (१) अ.नि. वल्लभभाई भुराभाई नसीत, अ.नि. दिवालीबेन वल्लभभाई नसीत - हस्ते प्रविणभाई नसीत (एन्जीनियर) (२) प.भ. अशोकभाई मणीलाल पटेल (बिलासीयावाला) - प्रेरक : जे.पी. स्वामी (३) प.भ. जीत रमेशभाई पूजारा - हस्ते : ब्रह्मचारी स्वामी घनश्यामप्रकाशानंदजी. श्रावण वद-२ ता. ३०-०८-२०२६ रविवार ग्लास पेईन्टींगना हिंडोला के यजमानश्री (१) प.भ. शिवेन मौलिक पटेल (अमेरिका) - हस्ते : रमेशभाई पटेल (सीए) (२) प.भ. पटेल मयंकभाई अश्विनभाई (नवावाडज) (३) प.भ. राजदिप भास्करभाई ब्रह्मभट्ट - हस्ते : सरोजबेन, सिध्धि, सत्व तथा परिवार. (४) प.भ. लालजीभाई हरिभाई ढांकेचा (निकोल) हस्ते : जयसुखभाई (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

धोलका धाम के २०० वर्ष के "त्योहार" के उपलक्ष्य में कालुपुर मंदिर में अखंड महामंत्र धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रेरणा से अपने धोलका मंदिर के देवो की प्रतिष्ठा के २०० वर्ष के ''त्योहार'' के उपक्रम में वर्तमान में धार्मिक, सामाजिक अनेक कार्यक्रम चल रहे है। विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में श्रावण सुद-११ पवित्रा एकादशी ता. २३-८-२०२६ को रविवार प्रातः ६ से शायं ६ बजे तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र की अखंड धून का आयोजन किया गया था। इस में अपने मंदिर के हरिभक्त धून का लाभ लिये थे। इस धून के यशश्वी यजमान अ.नि. श्री नारायणभाई लक्ष्मीदास पटेल, अ.नि. शांताबेन नारणभाई पटेल, अ.नि. श्री हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल, प्रदिपाबेन नारणभाई पटेल, श्री वेणुगोपाल हितेन्द्रभाई पटेल, अ.सौ. श्वेता वेणुगोपाल पटेल, कु. हिताथीं वेणुपोगाल पटेल, कु. हिताक्षी वेणुगोपाल पटेल आदि परिवार ने लाभ लिया था। धून के प्रारम्भ पर प.ब. वेणुगोपालभाई ठाकुरजी की आरती किये थे। महंत स्वामीने पुष्पहार पहनाकर सम्मान किये थे। इसी प्रकार हवेली में प.पू.अ.सौ. गादीवालश्रीने प.भ. प्रदिपाबेन को फूलहार पहनायी थी। प्रदीपाबेनने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आरती करके आशीर्वाद प्राप्त की थी। पूरे दिन शहर के हरिभक्त धून में बैठकर लाब लिये थे। अहमदाबाद के सभी संत मंदिर में बैठकर मंत्र का जाप किये थे। यजमान परिवार द्वारा धून में भाग लेने वालो के लिये फलाहार की व्यवस्था की गयी थी।

अखंड धुन में निम्नलिखित मंदिर के हरिभक्त क्रमश लाभ दिये थे। प्रातः ६-०० थी ८-०० : निकोल गाम, नवा निकोल, एप्रोच, मेमनगर (भक्तिनगर), शीलज, थलतेज। ८-०० थी १०-०० : महादेवनगर, जामफलवाडी, निरांत चोकडी (वस्त्राल), नरोडा (आदिश्वरनगर), बोपल, वणझर। १०-०० थी १२-०० : कर्मशक्तिपार्क (नवानरोडा), हर्षद कोलोनी, विराटनगर, कोटेश्वर, सुघड, नाना चिलोडा। १२-०० थी २-०० : जीवराजपार्क, कांकरिया, गोमतीपुर, खोखरा, अमराईवाडी, सरसपुर, सैजपुर-बोधा, अंजली (वासणा)। २-०० थी ४-०० : नवावाडज, घाटलोडिया, आर.सी. टेकनिकल, मीठाखली, कोचरब (पालडी), अदाणी शांतिग्राम। ४-०० थी ६-०० : न्यु राणीप, राणीप, नारणपुरा, नारणघाट, कालीगाम, साबरमती, मोटेरा, चांदखेडा टीपी-४४, जनतानगर आदि हरिभक्तो ने धून मे संगीत के सूर साथे रमझट बोलाई थी। (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

कालुपुर मंदिर के संतो द्वारा सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से नये निकोल में ता. ९-८-२०२६ रविवार के दिन सभा का प्रबन्ध किया गया था। इस में कालुपुर मंदिर से शा. दिव्यस्वरुपदासजी और स्वा. सच्चिदानंददास ने कथावार्ता करके हरिभक्तो को खुश किये थे।

ता. २-८-२०२६ रविवार श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से जीवराजपार्क मंदिर में स्वा. दिव्यस्वरुपदासजी ने कथा-वार्ता का लाभ दिये थे।

ता. ९-८-२०२६ रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क मे रात्रि को अमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पी.पी. स्वामी ने कथा वार्ता का लाभ दिये थे।

ता. २३-८-२०२६ को रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क में स्वा. भक्तपिर्काशदास (गांधीनगर मंदिर से-२) और कालुपुर मंदिर से सच्चिदानंद स्वामीने कथा-वार्ता का सुंदर लाभ दिये थे।(साधु दिव्यस्वरुपदास - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा द्वारा आगामी मोरली मनोहरदेव धोलका धाम के २०० वर्ष के ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में अनेक क्रिया-कलाप हो रहे है। इस में प्रतिदिन एक घंटा धुन तथा एकादशी के दिन प्रभात फेरी तथा २३-८-२०२६ रविवार पवित्रा एकादशी के दिन समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। इस में लालोडा के हरिभक्त लाभ लिये थे। पूरा प्रबन्ध लालोडा मंदिर के कोठारी स्वामी विश्वप्रकाशदासजी तथा स्वामी बालकृष्णदासजी और शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी ने किया था।(महेन्द्रसिंह दरबार)

मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर धांगध्रा धर्मादा कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर ध्रांगध्रा (सीता दरवाजा) में ता. १६ से १८ अगस्त तक धर्मादा सभा के अर्न्तगत कथा स.गु. स्वामी भक्तिहरिहरदासजी की प्रेरणा से तथा शिष्य मंत्रप्रकाशदासजी स्वामी ने दशांश-विशांस धर्मादाकी श्रीहरि के आज्ञानुसार सरल भाषा में अच्छे से समझाये थे। इसका प्रभाव इतना हुआ कि मूली श्री राधाकृष्णदेव के कोठार को रुपिया १२ लाख धर्मादा हरिभक्त लिखवाये थे। स्वा. सर्वेश्वरदासने सभा का संचालन अच्छे से किये थे।(अनिल दूधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

अषाढ सुद-१ प.भ. श्रेय दर्शन पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सुशीलाबेन कांतिभाई पटेल (धमासणा) । **अषाढ सुद-२** प.भ. सविताबेन रणछोडभाई देवाणी (निकोल), घनश्याम टीम्बर मार्ट (नेत्रा-कच्छ), प.भ. उजास महेन्द्रभाई पटेल (मुंबई), प.भ. जीनलकुमार जीज्ञेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. देवास्यकुमार अमरकुमार पटेल (अहमदाबाद), स.गु. संत स्वामी (कालुपुर मंदिर) । **अषाढ सुद-३/४** महंत सांख्ययोगी जसुबाई अने रामबाई (दहींसरा-कच्छ), श्रीहरि ईन्फ्रा । **अषाढ सुद-६** प.भ. अ.नि. धर्मिष्ठाबेन रमेशचंद्र पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. बाबुलाल मणीलाल पटेल (न्यु राणीप), श्रीहरि प्रसन्नार्थे - ह. धर्म (अहमदाबाद) । **अषाढ सुद-७** प.भ. वालबाई खीमजी भुवा (सुखपर-कच्छ) । **अषाढ सुद-८** प.भ. मनजी वेलजी हालाई (गोधरा-मांडवी-कच्छ) । **अषाढ सुद-९** प.भ. विनीतभाई रमेशभाई परीख (बोपल), प.भ. अ.नि. राजेन्द्रकुमार माणेकलाल (डांगरवा) । **अषाढ सुद-१०** प.भ. चिरागभाई बलवंतभाई सुतार (विद्यानगर), प.भ. भीमजी हरजी केराई (रामपर-वेकरा-कच्छ) । **अषाढ सुद-११** प.भ. जेनिका रोशनकुमार पटेल (नाना कलोदरा) । **अषाढ सुद-१२** प.भ. अ.नि. चंद्रिकाबेन भीखाभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. श्लोक वासुदेवभाई पटेल (मोखासण), प.भ. जयंतीभाई छगनदास पटेल (लक्ष्मणपुरा), प.भ. नवीनभाई पटेल (सांचोदर), प.भ. धर्मेशभाई वासुदेवभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. अल्केशभाई कानजीभाई चौधरी (बालवा), प.भ. गुंजन जयंतिलाल प्रजापति (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सुभद्राबेन परसोतमदास पटेल (अहमदाबाद), महिला मंडल (एप्रोच-बापुनगर), प.भ. अ.नि. दिपीकाबेन चंद्रकान्तभाई पटेल (कोठावाला) । **अषाढ सुद-१३** प.भ. अ.नि. रवजी मावजी हालाई, प.भ. अ.नि. वालबाई रवजी हालाई (दहींसरा-कच्छ), प.भ. लक्ष्मणभाई मावजीभाई पटेल (सांधली), प.भ. अंबालाल रामदास पटेल (विहार) । **अषाढ सुद-१४** प.भ. अ.नि. जीमील जीग्नेशभाई (लालोडा), प.भ. महेशभाई नारणभाई पटेल (उनावा), प.भ. रवजी नानजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. संजयकुमार एल. कापडीया (अहमदाबाद), प.भ. किशोर शिवजी हिराणी (भूज-कच्छ) । **अषाढ सुद-१५** प.भ. राजुभाई विठ्ठलदास पटेल (मोखासण), प.भ. अ.नि. रविकान्त मस्की (अहमदाबाद), प.भ. महेन्द्रकुमार डाह्याभाई चौधरी (ईश्वरपुरा), प.भ. हंसाबेन जे. शाह (फुल मंडली अहमदाबाद), प.भ. अक्षय पटेल (घमीज), श्रेयल भीमजीभाई राबडीया (सीडनी), प.भ. रामदास बापा परिवार (उनावा), प.भ. मावजीभाई शिवजीभाई पिंडोरीया, प.भ. प्रेमीलाबेन मावजी पिंडोरिया (सुखपर-रोहा-कच्छ), पद्म श्री कांति करशन पिंडोरिया, चेतना कांति पिंडोरिया (कच्छ-भुज) ।

अषाढ वद-१ प.भ. जीतेन्द्रभाई चिमनलाल राठोड (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. भरतभाई नागरभाई खाडीवार (ईंगोराला), प.भ. अ.नि. सिल्की बिन्देशभाई पटेल (गांधीनगर) । **अषाढ वद-३** प.भ. चंदुभाई हाथीभाई पटेल (मित्राल), प.भ. दृष्टिबेन धानाणी (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-४** प.भ. सुहागभाई रमणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. करशन केसरा पिंडोरीया (सुखपर-रोहा), प.भ. दशरथभाई रेवाभाई पटेल (डुंगरी), प.भ. प्रांसी सतीषकुमार मोदी (विसनगर), प.भ. अ.नि. रूक्ष्मणीबेन केशवलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अल्पेशभाई पटेल । **अषाढ वद-५** प.भ. अ.नि. वालजी करशन भूडीया (मानकुवा-कच्छ), प.भ. स्तव्य ध्रुविल पटेल (झुंडाल) । **अषाढ वद-६** प.भ. अ.नि. जसुबेन रवजी खेताणी (सुखपर-कच्छ) । **अषाढ वद-७** हजूरी पार्षद कनु भगत गुरु हजूरी पार्षद वनराज भगत (स्वा. बाग मेमनगर) । **अषाढ वद-८** प.भ. अ.नि. ईन्द्रवदन जीवणलाल पटेल (अहमदाबाद), सांख्ययोगी अंजुबा (गढडा) । **अषाढ वद-१०** प.भ. अ.नि. दर्शिन जगदीशचंद्र सोनी (अहमदाबाद), प.भ. भरतभाई रेवणीदास पटेल (देलवाडा) । **अषाढ वद-११** प.भ. गीरीशभाई घनश्यामभाई पटेल (वडु), प.भ. नर्मदाबेन कुंवरजीभाई मोरडीया (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. पार्थभाई मनहरभाई गांधी (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-१२/१३** प.भ. हेम गोविंद भंडेरी (सुखपर-कच्छ), प.भ. कुश पटेल (अहमदाबाद), अ.नि. रतनबाई मावजी हिराणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. अ.नि. आशिष भीखाभाई भावसार (सरसपुर), प.भ. महेश रवजीभाई मालसतर (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. विनुभाई पटेल (वावोल), प.भ. कांताबेन धनजीभाई वरसाणी (ओस्ट्रेलीया) । **अषाढ वद-१४** प.भ. देवकरणभाई रवाभाई मात (हिरापुर-कच्छ), प.भ. प्रविणभाई छनालाल भावसार (अहमदाबाद) । **अषाढ वद-३०** श्री नरनारायणदेव चरण सेवक, प.भ. माधवजीभाई लवजीभाई पटेल (निकोल), प.भ. धनबाई हिरजी भूडीया (मेघपर-कच्छ) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji



श्रावण मास के अवसर पर ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में अहमदाबाद मंदिर में पवित्रा एकादशी की अखंड धून करते संत हरिभक्त ।



अहमदाबाद मंदिर में प्रत्येक पूनम को नियमित सत्संग सभा में आरती उतारते प.पू. बड़े महाराजश्री ।



न्यु राणीप मंदिर के युवको द्वारा श्रावण मास में हनुमानजी के समक्ष अनेक प्रकार के कलात्मक हिंडोला बनाया गया ।



वैष्णवाचार्य पू. पा. गोस्वामी रणछोडलालजी के यहाँ पुत्र रत्न की प्राप्ति के अवसर पर प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से शुभेच्छा मुलाकात करते संत-हरिभक्त ।



गाँधीनगर से-२३ मंदिर में कलात्मक हिंडोला ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026



बोस्टन (अमेरिका) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी को अभिषेक करते और सभा में दर्शन देते श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप तथा रक्षाबंधन को प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथो द्वारा रक्षा कवच बाँधते प.पू. बिंदू राजाश्री ।



नये सालके केलेन्डर प्रकाशित हो चुके है । शीध्र प्राप्त कर ले

अमदावाद श्री नरनारायणदेव देश द्वारा प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा उन्होने पसंद किये गये अलौकिक दर्शनीय सुंदर नये वर्षका केलेन्डर प्रकाशित हो गया है । (**अपने छोटे-बडे मंदिर में यही केलेन्डर बनेगा कुछ परिवर्तन नहीं किया जायेगा ।**)

जो हरिभक्त केलेन्डर बनाना चाहतै है वह नीचे दीये हुअे नंबर पर संपर्क करें ।

मंदिर के लिये

किंमत रु १२-००

स.गु.बालु स्वामी : ९४२७०७०३७१

हार्दिकभाई : ७७७९०५२०४८

विज्ञापन के लिये

किंमत रु १४-००

विपुलभाई : ९७२५४४९२८८

प्रयागभाई : ९४२९०६७५८४

टिप्पणी : केलेन्डर मिनिमम ३०० और किसीभी अेक डिझाईन का ही करना होगा ।

Praful Kharsani